ज्ञानामृत

वर्ष 48, अंक 8, फरवरी, 2013 (मासिक)
मूल्य 7.50 रुपये, वार्षिक शुल्क 90 रुपये

1.**रायपुर (छ.ग.)**- छ.ग. विधानसभा में मंत्रियों एवं विधायकों को संबोधित करते हुए ब्र.कु. शिवानी बहन। मंचासीन हैं भ्राता सुरेश ओबेराय। सभा में उपस्थित हैं छ.ग. के मुख्यमंत्री भ्राता डॉ. रमन सिंह, विधानसभा अध्यक्ष भ्राता धरमलाल कौशिक एवं अन्य मंत्रीगण।
2.**सोनीपत (विश्व कल्याण सरोवर)**- 'भाग्य निश्चित या हमारी मर्जी' कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए हरियाणा विधानसभा अध्यक्ष भ्राता कुलदीप शर्मा, सेशन कोर्ट न्यायाधीश भ्राता कुलदीप जैन, ब्र.कु. लक्ष्मण भाई, ब्र.कु. शिवानी बहन तथा ब्र.कु. पुष्पा बहन।

1.कुल्लू- हिमाचल प्रदेश की राज्यपाल महामहिम बहन उर्मिला सिंह को ईश्वरीय सौगात देते हुए ब्र.कु. किरण बहन। **2.आनंद-** ब्र.कु. गीता बहन को उनकी सेवाओं के लिए मोमेन्टो देते हुए गुजरात की राज्यपाल महामहिम बहन कमला बेनीवाल। **3.शान्तिवन-** दादी जानकी जी को भेंट किये गये 27 फीट लंबे मोमेन्टो के लिम्का बुक ऑफ रिकॉर्ड्स में दर्ज होने का सर्टीफिकेट, दादी जी को देते हुए लिम्का बुक के मार्केटिंग हेड भ्राता वी.वी.मूर्ति। **4.श्रीरामपुर-** पिंपरी निर्मल पाठशाला की रजतजयंती समापन समारोह अवसर पर उपस्थित है भानूदास मुरकुटे, माधवराव पाटिल, अण्णासाहेब म्हस्के, ब्र.कु. कमलेश बहन, ब्र.कु. संतोष बहन, ब्र.कु. ऊषा बहन, ब्र.कु. राज बहन, ब्र.कु. भूपाल भाई तथा अन्य। **5.कुरुक्षेत्र-** आध्यात्मिक कार्यक्रम में संबोधित करते हुए ब्र.कु. आत्म प्रकाश भाई। मंचासीन हैं ब्र.कु. लक्ष्मण भाई, सांसद भ्राता नवीन जिंदल तथा अन्य। **6.सावनेर-** 'सफलता के पाँच कदम' कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए ब्र.कु. प्रभा मिश्रा बहन, ब्र.कु. पुष्पा बहन, भारतीय जनता पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष भ्राता नितिन गडकरी तथा अन्य। **7.भीलवाड़ा-** आपदा प्रबंधन एवं आध्यात्मिक सशक्तिकरण प्रदर्शनी का उद्घाटन करते हुए राजस्थान की शिक्षा राज्यमंत्री बहन नसीम अख्तर इंसाफ। साथ में ब्र.कु. तारा बहन, जिलाधीश भ्राता ओंकार सिंह तथा अन्य। **8.टिकैतगंज-** आध्यात्मिक प्रदर्शनी के अवलोकन के बाद उ.प्र. के ग्राम विकास मंत्री भ्राता अरविन्द सिंह गोप के साथ ब्र.कु. सरोज बहन।

संजय की कलम से ..

विशेषता शिवरात्रि की

यूँ तो हर 24 घंटे में एक बार रात्रि आ ही जाती है परंतु भारतीय जनजीवन में तीन रात्रियों का विशेष महत्व है, वे हैं – शिवरात्रि, नवरात्रि और दीपावली। यहाँ हम विशेष तौर पर इस बात पर विचार करेंगे कि वर्ष भर की अन्य तीन सौ बासठ या त्रेसठ रात्रियों में और शिवरात्रि में ऐसा क्या विशेष अंतर है जिस कारण उन रात्रियों का महत्व न होकर शिवरात्रि को एक त्योहार के रूप में अथवा एक पवित्र रात्रि के रूप में और वरदान देने वाली रात्रि के तौर पर मनाया जाता है। हम देखते भी हैं कि शिवरात्रि के अवसर पर भक्तजन कोशिश करते हैं कि (1) वे अपनी सुध-बुध को न भूलें अर्थात् वे इसमें सचेत (Conscious) रहते हैं कि वे विश्वनाथ बाबा, एकलिंग महाराज अथवा शिवबाबा के बच्चे आत्मा हैं। (2) इस चेतना द्वारा तथा उपवास द्वारा वे आलस्य, निद्रा तथा तमोगुण से दूर रहने का यत्न करते हैं ताकि उनमें सतोगुण का उद्रेक हो। (3) इस प्रकार के पुरुषार्थ द्वारा वे भविष्य के लिए कमाई करते हैं अथवा वरदानों को प्राप्त करने का यत्न करते हैं (4) वे भोगों की इच्छाओं को शांत करते हैं तथा शिवरात्रि पर (5) विकर्मों से बचकर रहते हैं।

वास्तविक शिवरात्रि की धुंधली यादगार

दूसरा प्रश्न यह भी है कि वर्ष में केवल एक ही बार जो शिवरात्रि का उत्सव मनाया जाता है, क्या यही वास्तविक शिवरात्रि है? यदि हाँ, तो इसका अर्थ यह होगा कि हम वर्ष की बाकी रात्रियों में भले ही तमोगुण के वशीभूत हुए रहें और शिवबाबा को भूले रहें तथा विकर्म करते रहें और शिवरात्रि आने पर एक बार निर्जला उपवास, जागरण तथा शिव-स्तुति कर लिया करें। यह तो वही बात हुई कि नौ सौ चूहे खाकर बिल्ली हज को चली। स्पष्ट है कि हर वर्ष भक्तगण जो शिवरात्रि मनाते हैं, यह वास्तविक शिवरात्रि की धुँधली-सी यादगार मात्र है।

उत्सव के लिए 'रात्रि' शब्द क्यों?

एक अन्य प्रश्न यह भी उठता है कि शिव परमात्मा के कल्याण के कार्य के स्मरणोत्सव को 'रात्रि' शब्द से क्यों युक्त किया गया? क्या परमात्मा ने किसी रात्रि को जन्म लिया था? क्या उसने 'रात्रि' को यह कार्य किया था? क्या 'रात्रि' ही में पवित्र रहने अथवा अपने कल्याण की बात सोचने की ओर ध्यान खिंचवाया था? इस विषय में स्मरण रखने की बात यह है कि यहाँ रात्रि शब्द चौबीस घंटे में

अमृत-सूची

- काम के गटर में तड़पता समाज *(सम्पादकीय)* 5
- प्रश्न हमारे, उत्तर दादी जी के.. 8
- विदेश में ईश्वरीय सेवा 10
- 'पत्र' संपादक के नाम 13
- 'प्रेम' एक महान गुण 14
- परमात्म प्यार द्वारा सूली बनी .17
- चेहरे और चलन से सेवा 18
- अन्तर्मन की ओर निवेश.....19
- जैसी संगत वैसी रंगत..... 22
- सच्चे का रक्षक भगवान.....23
- दृढ़ता में ही सफलता है 24
- आत्म-अनुशासन *(कविता)* ..25
- वर्तमान में जीयें. 26
- अपने किये पर ग्लानि हुई 27
- शक्ति निकेतन.....28
- सचित्र सेवा समाचार..... 30
- श्रेष्ठ संकल्पों की कमाल.....32

फार्म – 4

नियम 8 के अंतर्गत अपेक्षित पत्रिका का विवरण

1. प्रकाशन : ज्ञानामृत भवन, शान्तिवन, आबू रोड (राजस्थान)-307510

2. प्रकाशनावधि : मासिक

3. मुद्रक का नाम : ब्र.कु. आत्म प्रकाश
क्या भारत का नागरिक है? हाँ
पता – उपरोक्त

4. प्रकाशक का नाम : ब्र.कु. आत्म प्रकाश
क्या भारत का नागरिक है? हाँ
पता – उपरोक्त

5. सम्पादक का नाम : ब्र.कु. आत्म प्रकाश
क्या भारत का नागरिक है? हाँ
पता – उपरोक्त

सम्पूर्ण स्वामित्व : प्रजापिता ब्र.कु.ई.वि.विद्यालय

मैं, ब्र.कु. आत्म प्रकाश, एतद् द्वारा घोषित करता हूँ कि मेरी अधिकतम जानकारी एवं विश्वास के अनुसार ऊपर दिये गये विवरण सही हैं।

(ब्र.कु. आत्म प्रकाश)
सम्पादक

एक बार आने वाली 'रात्रि' का वाचक नहीं है क्योंकि आठ-दस घंटे में ही विश्व के कल्याण का कार्य नहीं हो जाता। पुनश्च, यदि किसी का जन्म रात्रि को भी हुआ हो तो उस कारण से उसके जन्म की तिथि को 'जन्म-रात्रि' नहीं कहा जाता बल्कि 'जन्म-दिन' ही कहा जाता है। अत: ज्ञात रहे कि यहाँ 'रात्रि' शब्द अज्ञानान्धकार का, तमोगुण एवं आलस्य का, स्वरूप-विस्मृति का तथा पापाचार का प्रतीक है। यहाँ 'रात्रि' शब्द उस 'महारात्रि' का वाचक है जबकि सारी सृष्टि में धर्म-भ्रष्टता, कर्म-भ्रष्टता और विकार प्रधान हो जाते हैं। ऐसा समय कलियुग का अंतिम चरण ही होता है। चूंकि परमात्मा शिव ऐसे ही अवसर पर अवतरित होकर कल्याण की ओर सभी का ध्यान खिंचवाते तथा विश्व का कल्याण करते हैं इसलिए इसे 'शिवरात्रि' कहा जाता है। यूँ द्वापरयुग और कलियुग, धर्म की कलाएँ क्षीण होने के कारण 'ब्रह्मा की रात्रि' तो है ही परंतु इसमें से भी इसके जिस भाग में शिव स्वयं आकर विश्व-कल्याण का कार्य करते हैं, उसका नाम 'शिवरात्रि' होता है। हम हर वर्ष जो त्योहार मनाते हैं, वह तो उस शिवरात्रि का स्मरणोत्सव मात्र है।

शिव का अवतरण – कब और कैसे?

मंदिरों में 'शिवलिंग' नाम से शिव की जो प्रतिमायें स्थापित हैं, उनसे स्पष्ट है कि शिव अशरीरी हैं। फिर प्रश्न उठता है कि उनका जन्म किस तन में और कैसे होता है?

यह तो सभी जानते ही हैं कि परमपिता परमात्मा जन्म-मरण से न्यारे हैं और कर्मातीत हैं। अत: वे कोई कर्म-जन्य शरीर लेकर किसी के पास शिशु रूप में तो पालना ले नहीं सकते, वे तो सभी के माता-पिता एवं पालनहार हैं। इसलिए वे कलियुग के अंतिम चरण में एक साधारण मनुष्य के तन में दिव्य प्रवेश करते हैं जिसे 'परकाया प्रवेश' भी कहा जाता है। उसके मुखारविन्द द्वारा वे ईश्वरीय ज्ञान और योग की शिक्षा देकर जन-मन को सतोप्रधान बनाकर सतयुग की पुन: स्थापना करते अर्थात् विश्व का कल्याण करते हैं। उसी मानव को वे प्रजापिता ब्रह्मा नाम देते हैं। उसी द्वारा उन्होंने पाँच हजार वर्ष पहले ज्ञान-गंगा बहाकर भारत को पावन किया था।

जानने योग्य महत्वपूर्ण रहस्य

इस विषय में एक और बात जानना जरूरी है। वह यह कि मनुष्यात्मायें तो शरीर धारण करने के बाद संसार में जीवन व्यतीत करतीं, कार्य करतीं और अंत में शरीर छोड़कर दूसरा शरीर लेती हैं। अत: हम जिस, किसी भी मनुष्य का जन्मदिन मनाते हैं, उसने अपने कर्मों के अनुसार भिन्न नाम-रूप से दूसरा शरीर अवश्य ही लिया होगा। यदि कोई कहे कि फलां मनुष्य-आत्मा ने पुनर्जन्म नहीं लिया बल्कि वह निर्वाण को प्राप्त हुआ तो उनके अपने ही मंतव्य के अनुसार इसका अर्थ यह होगा कि अब वह पुनर्जन्म नहीं लेगा। परंतु परमपिता परमात्मा शिव के बारे में ये दोनों बातें नहीं कही जा सकतीं। वे सदामुक्त हैं, न वे कोई अपना कर्म-जन्य शरीर लेते हैं, न ही एक शरीर छोड़ कर उनके पुनर्जन्म लेने का प्रश्न ही उठता है। वे तो जब अवतरित होकर परकाया प्रवेश करते हैं, तब भी सारा दिन, सारा समय उनका उस तन में रहना अनिवार्य नहीं क्योंकि उनका इस काया से कोई बंधन नहीं है। पुनश्च, उनके मुक्त होने का यह भी अर्थ नहीं कि वे फिर इस लोक में नहीं आते बल्कि उनका तो कर्त्तव्य ही यह है कि हर कलियुग के अंत में जब पुन: अज्ञानान्धकार रूप रात्रि होती है, तब वे पुन: आकर ज्ञान, योग तथा पवित्रता द्वारा विश्व का कल्याण करते हैं। **अत: उनका शिव नाम तो शाश्वत है। उनका यह कर्त्तव्य भी हर कल्प पुनरावृत्त होने वाला है। वे तो स्वभाव से ही करुणा के सागर हैं। अत: हर चतुर्युगी में, हर काल का अंतिम चरण आने पर जब यह संसार दुखधाम बन जाता है, तब वे पुन: प्रजापिता ब्रह्मा के तन में दिव्य प्रवेश करके इसे सुखधाम बनाते हैं।**

इस अत्यंत महत्वपूर्ण रहस्य को

(शेष..पृष्ठ 12 पर)

सम्पादकीय ..✍

काम के गटर में तड़पता समाज

एक समय था जब जंगली जानवरों का भय हुआ करता था। रात के अंधेरे में उनका प्रकोप होता था, कभी तो दिन-दहाड़े भी। कोई बच्चे को उठा ले जाता था, कोई पशु को घायल कर जाता था, मार जाता था। पर आज ना तो जंगली जानवर हैं, ना जंगल, फिर भी समाज में भय क्यों व्याप्त है?

दूसरा भय होता था आक्रमण - कारियों का। पुराने जमाने में आक्रांता आते थे, देश को लूटते थे, साथ ही देश की बहू-बेटियों पर भी हाथ डालते थे परंतु आज इस मामले में हम भयमुक्त हैं। हमारे जागरूक प्रहरी सीमा पर ही निपट लेते हैं। यदि कोई घुसपैठ करता भी है तो कम से कम माताओं-बहनों तक तो उसके हाथ पहुंचते नहीं हैं फिर भी बहनें क्यों असुरक्षित हैं?

शास्त्रों में गायन है कि कंस, रावण, दुर्योधन जैसे राक्षसों के राज्य में नारियों का सतीत्व सुरक्षित नहीं था पर आज ना तो राक्षस हैं, ना राक्षस-राज फिर भला नारी को रक्षा किससे चाहिए। जहाँ तक सींग, नाखून और दांत वाली जाति का प्रश्न है, वह भी केवल कहानियों से सुनने में आई है, वास्तविक जीवन में तो उनका अस्तित्व ही नहीं है, फिर मातायें-बहनें असुरक्षित क्यों?

कौन दे रहा है पतन का प्रशिक्षण?

वास्तव में इस सुविधाभोगी संस्कृति में, हाथ की पहुँच तक सभी सुविधाओं की उपलब्धि के साथ-साथ अपराधों की उपलब्धि भी इतनी ही सहज हो गई है। अब दुश्मन जंगलों में नहीं, सीमा पार नहीं बल्कि गली, मोहल्लों, आम रास्तों और तथाकथित सभ्यों के बीच में आस्तीन के सांप की तरह मौजूद हैं। तरक्की की आड़ में, पतन की गहरी खाई में एक के बाद एक मानव हर रोज गिर रहे हैं पर झूठी तरक्की के शोर-शराबे में उनकी चीत्कार दबकर रह जाती है। और फिर महत्वपूर्ण सवाल यह भी तो है कि मानव को सरेआम पतन में गिरने और गिराने का प्रशिक्षण कोई बाहर से आकर दे रहे हैं या हम और हमारा मीडिया, हमारे परिवारों का लज्जाविहीन व्यवहार, चमड़ी-दमड़ी में बंधा हमारा मन, स्वतंत्रता के नाम पर हमारी स्वच्छंदता इसके लिए जिम्मेवार है?

भ्रातृ और पितृ भाव में अवरोध क्यों?

आप चाहे किसी भी उम्र के हैं, किसी भी लिंग के हैं, यदि आपको देखकर विपरीत लिंग का व्यक्ति भयभीत हो रहा है तो इसे क्या समझा जाये? आपके समकक्ष किशोरी या नवयौवना को आपसे भाई की भासना नहीं आती, वह रास्ता बदलकर निकलती है, ऐसा क्यों? आप ना तो जंगली जानवर हैं, ना बड़े-बड़े नाखूनों वाले राक्षस, ना विदेशी आक्रान्ता, फिर आपसे किसी को भय क्यों? आपकी पुत्री की उम्र की कन्या आपके सामने जाने से कतराती है, क्यों? क्या पितृभाव के प्रकंपनों में कोई अवरोध है? और यदि ऐसा है तो हम इस समाज में शान्ति की बजाय भय, नफरत, अविश्वास और धोखे की लहर पैदा कर रहे हैं। अपने हाथों अपने समाज की शान्ति चुरा रहे हैं। हम प्रेम, भाईचारे, शान्ति, अमन-चैन के रक्षक नहीं, भक्षक बन रहे हैं।

याद आता है भारत का वो भव्य आदिकाल

भारत के आदिकाल में मानवीय रिश्तों में गरिमा थी। सभी की आत्मिक दृष्टि होने के कारण नर-नारी दोनों पवित्र थे, काम-वासना का नामोनिशान भी नहीं था। गृहस्थ जीवन भी काम भोग से रहित होने के कारण मंदिर समान था। संतान योगबल से पैदा होती थी।

देवयुग के बाद वैदिक युग आया। इस युग में भी नारी सम्मानित थी। वह

भगवती, कल्याणी थी। यद्यपि काम विकार सिर उठाने लगा था पर अनेक धार्मिक, सामाजिक मान्यताओं के अंकुश में था। संतानोत्पत्ति के लक्ष्य से इसका प्रयोग करके नर-नारी इससे विरत हो जाया करते थे। उस समय की मान्यता थी, **'पुत्राय क्रियते भार्या'** अर्थात् पुत्र की उत्पत्ति के लिए ही स्त्री को भार्या बनाया जाता था। इस उद्देश्य की पूर्ति के बाद पुरुष उसे सहधर्मिणी मान धर्म के कार्यों में प्रवृत्त हो जाता था।

सहधर्मिणी बनी सहपापिनी

आज विश्व का संपूर्ण ढाँचा वासनाओं की दीवारों से घिरा है। वासनाओं की सरिता में नित्य डुबकियाँ लगाता हुआ मनुष्य संसार में चैन खोजता है मानो नींद की दस गोलियाँ खाकर जागना चाहता है। उसे पता ही नहीं कि नींद का तो उसने आह्वान किया है। विचार करना होगा कि जीवन दुखों के ढेर पर क्यों आ खड़ा हुआ? प्राचीन काल से ही महापुरुषों ने दुखों व अशांति के अनेक कारण बताये परंतु उन सबसे सूक्ष्म है कामवासना। यही दुखों का कारण है, यही पापों का बीज है। इसी से मन-बुद्धि दूषित व कमजोर होते हैं। इसी से मानव पतन की ओर अथवा पराजय की ओर उन्मुख होता है। इसी काम अग्नि में नारी का सहधर्मिणी का रूप जल चुका है। अब तो वह मात्र पुरुष की वासना तृप्ति का साधन रह गई है। उसे सहधर्मिणी के बजाय सहपापिन बना लिया गया है।

बम से भी भयंकर है काम का विस्फोट

इससे भी बढ़कर आधुनिक काल में तो काम विकार ने सारे बाँध तोड़ डाले हैं। वह गृहस्थ की चारदीवारी फांदकर जहाँ-तहाँ सेंध लगा रहा है। काम की इस कुलालसा के सामने न कोई माता है, न बहन। जैसे कसाई को हर शरीर में माँस ही नजर आता है, उसी प्रकार काम से काली दृष्टि वाले के लिए नारी शरीर भोग्या ही है। काम के ज्वार में उम्र की लिहाज, रिश्ते की लिहाज सब बह गये। एटम और हाइड्रोजन से भी भयंकर इस काम के विस्फोट की ज्वाला में आज हर नर-नारी जल-भुन रहा है। अपराध, हिंसा, अनाथालय, गरीबी, भूखमरी – ये सब इस ज्वाला के ही परिणाम हैं।

शीतल फुहारों के साथ पिता परमात्मा का अवतरण

प्रश्न है कि क्या मानवता को इस ज्वाला में जलकर भस्म होने दिया जाये? नहीं, सृष्टि का रचयिता ऐसे भयंकर समय में चुप नहीं बैठ सकता, वह परम पावन परमात्मा ज्ञान-योग की शीतल फुहारों के साथ इस तपती सृष्टि पर अवतरित है। धरती पर उसकी शीतल फुहारों की शरण लेने वाला ही काम की तपत से बच सकता है। लाखों ब्रह्माकुमार-कुमारियों ने उसकी शरण में आकर इंद्रिय शीतलता पाई है और अब इस शीतलता से अन्यों की सेवा में तत्पर हैं। परंतु आश्चर्य है, लोग शीतल फुहार बरसाने वाले को पहचान नहीं पा रहे हैं, न पहचानने के कारण उससे भय भी खाते हैं।

दूरी बनाओ काम से, कामारि से नहीं

ज़रा विचार तो करो, कल्याण करने वाले प्रभु से भय कैसा? उनसे दूरी क्यों? वे तो कामारि हैं, काम का काम तमाम करने वाले हैं। अरे, दूरी बनाओ उनसे जो काम से पथराई आँखों से हर आती-जाती नारी को घूरते हैं। लोगों की नजरें बचा-बचाकर चौराहों पर पोस्टर लगाते हैं और उन पर नजरें गड़ा-गड़ाकर काम के ज़हर को पीते हैं। दूरी बनाओ उनसे जो किसी की इज्जत को तार-तार करने की फिराक में रहते हैं। दूरी बनाओ उनसे जो कीमती शारीरिक शक्ति को काम के नाले में बहाकर भरी जवानी में बुढ़ापे से हाथ मिला लेते हैं, जो गुप्त रोगों के नाम पर चौराहों पर तंबू लगाने वाले तथाकथित हकीमों को हजारों रुपया लुटाते हैं। दूरी बनाओ उनसे जो चमड़ी पर लट्टू होकर अपने मान-इज्जत और कर्त्तव्य की होली जला देते हैं। कौन-सी क्रूरता नहीं दिखाई

इस काम ने? इसके लंबे नाखूनों में तो बारह साल के बच्चे और नब्बे साल के बूढ़े भी फँसे हैं।

काम से फैलती है अपराध वृत्ति

हमारी यह बात सुनकर, माया के अधीन हुए लोग अथवा पाश्चात्य रंग में रंगे हुए लोग अथवा भारत में भी आधुनिकता के बहाव में बहने वाला तथाकथित शिक्षित वर्ग अवश्य हँसेगा। उनके गले यह बात नहीं उतरेगी जो कि काम को ही जीवन मान चुके हैं। जिन्होंने अपने बच्चों को भी काम-गंगा में नहाने के लिए स्वतंत्र कर रखा है। परंतु आज की परिस्थितियों में सभी को यह सत्य स्वीकार करना ही पड़ेगा कि इन विषय-वासनाओं में अल्पकालीन आनन्द तो है परंतु उसके बाद होती है सदाकालीन अशान्ति, मन में तनाव, अनिद्रा, क्रोध और चिड़चिड़ापन, फलस्वरूप समाज में फैलती है अपराध वृत्ति।

विकसित मानव के मुख पर थप्पड़

आज के युवा वर्ग में बढ़ती हुई काम पिपासा उसे विनाश के कगार पर ले आई है। अबोध युवा काम-सुख की गहरी खाई में कूदकर सदा के लिए उदासी व निराशा के द्वार खोल देता है। यह मनुष्य की हार है। विकसित मानव के मुख पर थप्पड़ है। आज आँख मूँदकर फ्रायड जैसे मनोवैज्ञानिकों की विचारधाराओं को उसने अंगीकार कर लिया जो किसी अभिशाप से कम नहीं है। उसने यह कभी सोचा ही नहीं कि महान भारत के महान पुरुषों ने ब्रह्मचर्य पर बल क्यों दिया।

जो अध्यात्म पथ पर विकास करना चाहते हैं, जो संन्यास धारण कर चुके हैं, जो योग-अभ्यास करते हैं, उन्हें ब्रह्मचर्य को दृढ़तापूर्वक धारण कर लेना चाहिए। उन्हें इधर-उधर नहीं देखना चाहिए।

संयम में है सुख

गृहस्थी नर-नारी को भी संयमित जीवन बिताना चाहिए। संयम में ही सुख है। माँ-बाप को यह नहीं भूलना चाहिए कि उनके प्रत्येक कर्म का प्रभाव उनके बच्चों पर पड़ता है, इसके लिए अपनी काम-पिपासा को तृप्त करने के लिए सभी नियमों व मर्यादाओं को खूंटी पर नहीं टांग देना चाहिए, नहीं तो जैसा कर्म माता-पिता करेंगे, संतान भी वैसा ही अनुकरण करेगी।

क्या कहती है कर्म गति?

यदि हम किसी का धन छीन लें तो वह व्यक्ति पंचायत या कचहरी में अपील करता है। निर्णय करने वाला सारी बात को जानकर दोनों पक्षों को आमने-सामने बुलाता है। अब हम अपना अपराध कबूल कर लें, माफी मांग लें तो क्या इतने से काम चल जायेगा। जो धन छिना गया, उसका क्या होगा, उसे लौटाना पड़ेगा ना। केवल माफी मांग लेने से, गलती मान लेने से, धन लौटाने से तो नहीं बच जायेंगे ना। माफी मांगने के साथ-साथ धन लौटाना और आगे ऐसी गलती ना करने का दृढ़ निश्चय करना भी जरूरी है।

अब यदि कोई किसी की शान्ति छीन ले, पवित्रता छीन ले, खुशी छीन ले तो वह भी लुटेरा हुआ ना। धन यदि भौतिक सम्पदा है तो खुशी, शान्ति, पवित्रता आध्यात्मिक संपदा है। जैसे धन लुटने पर दुख होता है, शान्ति, खुशी, पवित्रता लुटने पर भी दुख होता है। अब यदि लूटने वाला केवल माफी मांग ले, सॉरी कह दे तो क्या इतने मात्र से उसका कर्म उतर जायेगा? किसी को अशांत करना, दुखी करना, अपवित्र करना – यह भी कर्ज है और इस कर्ज को चुक्ता भी करना पड़ता है। या तो हम किसी को दुखी-अशांत करके ऐसा कर्ज ना चढ़ाएँ, यदि चढ़ाते हैं तो उसे उतारने का ख्याल भी करें। उतारने का तरीका यही है कि जितना दुख दिया, अशान्त किया, उसकी भेंट में ब्याज सहित सुख, शान्ति का, पवित्रता का दान करें। इसलिए भगवान कहते हैं कि एक भी पापकर्म हो जाये तो उसके बदले सौ गुणा पुण्य करो, तभी पुण्यात्मा बन पायेंगे, नहीं तो पिछला हिसाब खींचता रहेगा।

– ब्र.कु. आत्म प्रकाश

प्रश्न हमारे, उत्तर दादी जी के

दिव्य बुद्धि के वरदान से विभूषित आदरणीया दादी जानकी जी, हर प्रकार के प्रश्नों के उत्तर देकर आत्मा को संतोष से भर देती हैं। बुद्धिवानों की बुद्धि बाबा ने उन्हें ऐसी कला प्रदान की है कि वे उलझे कर्मों की गुत्थियाँ सुलझाकर समाधानस्वरूप बना देती हैं। प्रस्तुत हैं भाई-बहनों द्वारा पूछे गए प्रश्नों के दादी जानकी द्वारा दिये गये उत्तर ... – सम्पादक

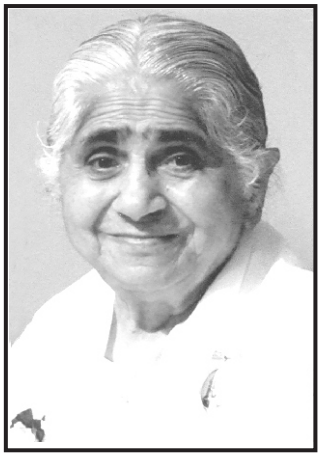

प्रश्नः- कोई ग्रहचारी हटाने के लिए क्या करें?

उत्तरः- पहले तो ग्रहचारी को हटाने के लिये खास तपस्या करनी चाहिए। ग्रहचारी हटाना ज़रूरी है। एक ग्रहचारी बहुत बड़ी होती है, एक हल्की होती है पर हल्की भी न हो। हमारे ऊपर सदा ही बृहस्पति की दशा हो, इस भावना से अच्छी तरह से तपस्या करनी है। बेहोश को होश में ले आयें, इतनी हमारे ऊपर बृहस्पति की दशा हो, यह पुरुषार्थ है।

प्रश्नः- ईर्ष्या किस तरह नुकसान करती है?

उत्तरः- देखा गया है कि कई हैं जो सूक्ष्म ईर्ष्या के कारण किसी को आगे बढ़ता हुआ देख सहन नहीं कर सकते। फिर अपना कोई रास्ता निकालके अपने को आगे लाना चाहते हैं, वो विघ्न रूप हो जाता है। न खुद में सफलता, न औरों को सफल होने देंगे। अपने कर्मों से हम अपना भाग्य आपेही पायेंगे, इस समझ की कमी ईर्ष्या ले आती है। जिसकी बुद्धि में बेहद का बाप है, बेहद की नॉलेज है, बेहद का वर्सा है, उसमें ऐसी ईर्ष्या नहीं हो सकती। यज्ञ इतिहास में भी कोई मम्मा को आगे देख सहन नहीं कर सकते थे। बाबा, मम्मा की महिमा करे वो देखा नहीं जाता था। उनसे कई गलतियाँ होने लगीं, वो फिर ठहर नहीं सके, वो वापस लौकिक में चले गये। शादी नहीं की परन्तु यज्ञ में रहना ही मुश्किल हो गया। ईर्ष्या बहुत नुकसानकारक है। ईर्ष्या वाला जितना समय यज्ञ में रहेगा, नुकसान ही नुकसान। वह विघ्न डालता है माना थोड़ा आसुरीपना है। जिसके प्रति इच्छा और ममता है उसके लिये कहेंगे, तुम आगे जाओ, दूसरे के लिए कहेंगे, यह ऐसे क्यों! मेरे लिये क्यों नहीं, यह सूक्ष्म रूप से गलत है। न इच्छा, न ममता। इच्छा मात्रम् अविद्या। करो भले सब कुछ, भावना से करो, कामना नहीं रखो। अगर कामना से किया और वो पूरी नहीं हुई तो संशय आयेगा, विघ्न डालेंगे फिर दोष देंगे औरों को। कहेंगे, बीच-बीच में यह क्यों आता है? मुझे बाबा से मिलने नहीं देते हैं। जो अन्दर होता है वो मुख से निकलता रहता है। ऐसी बातें वायुमण्डल को शुद्ध, शान्त बनने नहीं देती हैं। अन्दर खुद शुद्ध, शान्त रहने का अनुभव नहीं करता, इसलिए अभी गहरा पुरुषार्थ करना है। जितना आगे बढ़ते जा रहे हैं उतना माया भी सूक्ष्म रूप धारण करती जा रही है। बाबा कहते, मेरे बच्चे मेरी माला में आवें, माया कहती है, मेरी माला में आवें। माया अपनी माला बनाने लिये तैयार बैठी है। तो अपने को सम्भालना है, मायाजीते जगतजीत बनना है।

प्रश्नः- न चलायमान, न डोलायमान इसकी युक्ति क्या है?

उत्तरः- अंदर में देह-अभिमान कितना छिपा हुआ बैठा है, उसे महसूस करें। वो हमें प्रयोग करता है, हम भी उसे प्रयोग करते हैं। आत्म स्थिति में रहना, अपने को आत्मा समझ बाबा से शक्ति खींचना – यह देह-अभिमान करने नहीं देता है। ज्ञान

का सागर, प्रेम का सागर, शान्ति का सागर, सर्वशक्तिमान बाबा है। मैं अपने को आत्मा समझकर बाबा से ऐसा संबंध जोडूँ जो आत्म-स्थिति में रहने की शक्ति अंदर से अडोल बना दे। अडोल स्थिति कैसे बनी? कभी न चलायमान, न डोलायमान। इसके लिए चाहिए एकाग्रता की शक्ति। बाबा कहते हैं, बच्चे, तुम मास्टर सर्वशक्तिमान हो। वो तब समझेंगे जब स्मृति होगी, मैं बाबा की, बाबा मेरा। ऐसा महसूस करने से सुख मिलता इलाही है।

प्रश्नः- मन, बुद्धि को ऑर्डर में रखने से तुरंत क्या प्राप्ति होती है?

उत्तरः- जो मन-बुद्धि को अपने ऑर्डर में रखता है वो हमेशा खुश रहता है। योग में कर्मातीत, अव्यक्त, संपूर्ण – आप सब ही तो बनने वाले हो ना! दिन-प्रतिदिन न्यारे बनने से, बाबा का प्यार पाने से धरती पर पांव नहीं रहने चाहिएँ। फरिश्तों के पांव धरती पर नहीं रहते हैं। साकार में रहते भी अव्यक्त निराकारी रहते हैं। सर्वगुणों में संपन्न बनने के लिए, औरों को भी गुणवान बनने के लिए हम साथ दे रहे हैं। मेरे को तो भगवान ने जो पार्ट दिया है, उसमें बहुत खुश हूँ, मस्त योगी हूँ, मस्त फकीर। कितना अच्छा पार्ट बाबा ने दिया है। हरेक का अच्छा पार्ट है। सबके पार्ट को साक्षी हो देखना, यह भी अच्छा है। सबके साथ मिलनसार होके, मिल करके रहना यह बहुत अच्छा पार्ट है। ऐसी कोई आत्मा न हो जो मैं कहूँ, यह अच्छी नहीं है, यह सोचना भी नहीं है, कहना भी नहीं है। कभी भी स्वभाव परिवर्तन न हो। सदा ही क्वीन मदर की बात याद रखना – झुक-झुक, सिख-सिख, मर-मर। सुनने में भी ऐसी सीखने की भावना, स्नेह की भावना, सच्चाई की भावना हो जो हम सब एक हैं, एक के हैं। वन गॉड वन वर्ल्ड वन फैमिली हैं – इतना अंदर बुद्धि बेहद में रहे, खुश रहे। कभी भी कोई आपके चेहरे पर नाखुशी को न देखे।

प्रश्नः- अपनी कमी मिटानी है तो क्या करें?

उत्तरः- सदा एक बाप, दूसरा ना कोई। एक बाबा के सिवाय दूसरी कोई बात दिल में नहीं रखनी है। बाबा बैठा है, हम निश्चिंत हैं, कोई चिंता की बात नहीं है पर निश्चिंत भी तभी रहेंगे जब हमारे चिंतन में बाबा होगा, शुभ चिंतन होगा अपने लिए, शुभ चिंतक होंगे सबके लिए। पुरुषार्थ में, चाहे सेवा में, चाहे संबंध में, स्व, सेवा, संबंध तीनों ही श्रेष्ठ हों। स्व की स्थिति, जैसे आज बाबा ने कहा, हंस तैरता भी है तो उड़ता भी है। **ज्ञान तैरना सिखाता है, न्यारा बनना सिखाता है, योग उड़ना सिखाता है** तो जब हम ऐसी चलन चलते हैं, ऐसा भाग्य बनाते हैं, तो हमारे को देख औरों का भाग्य बन जाता है। ना किसी की कमी देखो, ना सुनो, ना मुख से वर्णन करो, यह थोड़ी भी आदत हो तो मिटा देना। कमी देखना, सुनना, फिर मुख से बोलना – बड़ा नुकसानकारक है। मेरी कोई कमी देखता है तो अच्छा नहीं लगता है, मैं किसी की कमी देखूँ, किसने मुझे छुट्टी दी है? अगर अपनी कमी मिटानी हो तो किसी की कमी नहीं देखो। किसी ने पूछा, किसी की गलतियाँ कब तक सहन करें? मैंने कहा, यह भी अभिमान बोल रहा है, तुम गलतियाँ देखते ही क्यों हो, तुम ऐसा करो, जो कोई गलती करे ही नहीं। हमारे को देख, वायुमंडल को देख, प्यार भरे वायुमंडल, वायब्रेशन को देख परिवर्तित हो जाये।

प्रश्नः- सेवा में थकावट ना आए, क्या करें?

उत्तरः- अपने को टीचर नहीं समझो, सेवा साथी हो। एक योग अपने लिए लगाते हैं जो कोई याद न आये, दूसरा सेवा में योग लग जाता है। सेवा करते रहो, कभी थकना नहीं। थकते वो हैं जो आवाज़ में ज्यादा आते हैं। थकावट उनको होती है जो देह अभिमान में आते हैं। अरे बाबा की सेवा है, बाबा के बच्चों की सेवा है, हम सेवाधारी हैं, सच्चाई और प्रेम में थकावट नहीं होती है। योग और ज्ञान है तो आटोमेटिक देह, संबंध से न्यारे और बाबा के प्यारे हो जाते हैं। ऐसी स्मृति अच्छी हो कि सब बाबा के प्यारे बच्चे हैं, भले हज़ारों बैठे हैं पर सब बाबा के बच्चे हैं। ❖

विदेश में ईश्वरीय सेवा का प्रारंभ - 3

● ब्रह्माकुमार रमेश शाह, मुंबई (गामदेवी)

जब ऊषा और मैं होनोलूलू से जापान गये तो वहाँ टोक्यो में एक अमेरिकन योगी के यहाँ ठहरे जिसका परिचय Awosting Retreat में हुआ था। वह वहाँ योग सिखाता था। उन्हें हमने शिव बाबा का परिचय दिया था। उनकी जापानी युगल, जापान के मुख्य धर्म शिंटो की मुख्य शाखा की संचालिका के साथ कारोबार करती थी और इसी कारण हमारा शिंटो धर्म की उस शाखा में जाना हुआ। वहाँ मालूम पड़ा कि उनके पास हिमालय से लाया हुआ एक पत्थर है जिससे उन्हें संदेश मिलता है। उन्होंने कहा कि हम आपको यह दिखायेंगे। फिर उन्होंने एक बड़ा थाल लिया और उसके अंदर उस पत्थर को रखा। फिर उसके चारों ओर फूल-हार आदि रखे। उसका रंग तो सफेद था लेकिन आकार बिल्कुल शिवलिंग जैसा था। हम लोगों ने भी चंदन के हार उस पर रख दिये। थाल के चारों तरफ हम वृत्ताकार घेरे में बैठ गये। संगीत बजता रहा और उनमें से दो बहनें ध्यान में चली गईं। पंद्रह-बीस मिनट तक वे ध्यान में रहीं। ऊषा जी भी सेमी ट्रांस में जाती थी तो उन्होंने मुझे बताया कि आज प्यारे बाबा का संदेश यही है कि इस संस्था से संयुक्त रूप में कारोबार करो। आबू में कांफ्रेंस का आयोजन करो और उसमें इस संस्था की मुख्य बहन को निमंत्रण दो। जो डायरेक्शन हमें शिवबाबा ने दिया था, उसी तरह का डायरेक्शन उस पत्थर ने उन बहनों को दिया कि भारत से ये दो मेहमान आये हैं, ये मेरे बच्चे हैं। आपकी संस्था जापान में अग्रणी संस्था बनना चाहती है और लोगों की सेवा करना चाहती है तो ये जो बात आपको बतायेंगे, अगर आप उन्हें अपनायेंगे तो आपका लक्ष्य सिद्ध हो जायेगा।

बाबा से मिले संदेश के आधार पर हमने उनसे कहा कि हम आबू में योग की कांफ्रेंस करेंगे, मधुबन से तारीख निश्चित करके आपको बतायेंगे। इस प्रकार उन्हें आबू आने का निमंत्रण दिया।

उनकी बातें सुन ऐसा लगा कि कल्प वृक्ष में सभी धर्मों की शाखाओं की सतोप्रधान अवस्था का निर्माण शिवबाबा करा रहे हैं। जिस प्रकार हरेक शाखा का तने से संबंध होता है, उसी प्रकार से उनका संबंध ईश्वरीय विश्व विद्यालय से जुड़ा है। उस संस्था की मुखिया काफी वृद्ध थी फिर भी हिमालय के पत्थर से मिले संदेश तथा ईश्वरीय निमंत्रण के आधार पर वे भारत आईं, मुंबई भी रहीं। वहाँ भी उनके द्वारा ईश्वरीय सेवा हुई। माउंट आबू में सात दिन रहीं और योग कांफ्रेंस में शामिल हुईं। ज्यादातर वे बाबा के कमरे में योगाभ्यास करती थी तथा उनकी जो इच्छा थी कि उनकी संस्था शिंटो धर्म की मुख्य प्रचारक बने, उसके लिए ही मेहनत करती थी। इस प्रकार शिवबाबा ने इस बात का अनुभव हमें कराया कि शिवबाबा केवल ब्राह्मण, देवता, क्षत्रिय धर्म की स्थापना ही संगमयुग पर नहीं करते बल्कि सभी धर्मों की सर्वश्रेष्ठ सतोप्रधान स्थिति की स्थापना भी संगमयुग पर ही करते हैं और शिवबाबा ही सभी धर्मों के पिता हैं। हम जापान में चार दिन रहे, काफी ज्ञान की चर्चा हुई, हमने अपना साहित्य भी उन्हें दिया।

जापान में ताओ धर्म की संस्था में भी हमारा जाना हुआ। उसका नामाचार बहुत था और लाखों अनुयायी थे। हमने उन्हें परमात्मा का परिचय दिया। उनके कार्यकर्त्ताओं ने कहा कि आप जो ज्ञान देते हैं, वही ज्ञान हमारे पास भी है। आप कहते हैं कि परमात्मा बिन्दुरूप है, हमें भी मालूम है कि परमात्मा बिंदु रूप है। उन्होंने विस्तार से बताया कि हमारी संस्था का निर्माण परमात्मा ने किया है। हमारी बहनें ट्रांस में जाती हैं, अनुभव करके आती हैं। हम एक बहुत बड़ा सफेद कपड़ा रखते हैं, उस पर काले रंग के ब्रश से बहनें संदेश

लिखती हैं जिस आधार पर संस्था का कारोबार चलता है। एक बार हमने प्रश्न पूछा कि हमें संदेश देने वाले आप कौन हैं, आपका स्वरूप क्या है, हमें आपका फोटो चाहिए। तब उस संदेशी बहन द्वारा सफेद कपड़े पर लिखा संदेश मिला कि आप एक स्थान पर जाइये तथा वहाँ जाकर मेरा फोटो निकालिये। मैं वहाँ हाज़िर रहूँगा। उस संदेश में कहे स्थान पर हम लोग कैमरा आदि लेकर पहुँचे तथा इंतज़ार करने लगे कि अभी परमात्मा आयेंगे परंतु परमात्मा तो आये नहीं। हम लोग निराश होकर वापस आ गये। बहन को ट्रांस में संदेश देकर भेजा कि आप परमात्मा तो आये नहीं, हम लोग वापिस आ गये। जवाब मिला कि मैं तो वहाँ पर आया था पर आपने मेरा फोटो निकाला नहीं, आप निकालते तो फोटो ज़रूर आता, फिर से उस स्थान पर जाइये, मैं दुबारा आऊँगा, इस बार मेरा फोटो ज़रूर निकालना। हम पुन: वहाँ पहुँचे, कोई दिखाई नहीं दिया परंतु समय पर हमने कैमरे का शटर दबा दिया। वापस आने पर पॉजिटिव किया तो कुछ नहीं आया। फिर संदेश भेजा कि आपका फोटो तो आया नहीं। संदेश मिला कि बड़ा फोटो निकालो। बड़ा निकाला, कुछ दिखाई नहीं दिया। फिर संदेश भेजा तो कहा कि 6 फीट X 6 फीट का बड़ा फोटो निकालो। हमने वैसा किया तो एक काला बिंदु दिखाई दिया। हमने संदेश भेजा कि इसमें कोई शक्ल नहीं दिख रही है, एक काला बिंदु ही दिख रहा है। संदेश मिला कि मेरा वही स्वरूप है, मेरा मनुष्य जैसा आकार नहीं है इसलिए आँखों से दिखाई नहीं पड़ता है। मैं बिंदु रूप परमात्मा ही आपको मार्गदर्शन देता हूँ। इस प्रकार से उन्होंने अपनी संस्था का इतिहास बताया।

उसी दिन अमृतवेले योग में बाबा ने ऊषा को यही बताया था कि आप वहाँ जायेंगे तो वहाँ ताओ धर्म के मुख्य से बात होगी। मेरे दिव्य कर्त्तव्य की अनुभूति भी होगी। वहाँ पर उनके मुख से परमात्मा के बिन्दी रूप के स्वरूप की बात सुन हमें आश्चर्य हुआ। बाद में उनकी बड़ी सभा में ऊषा जी और मैंने ईश्वरीय ज्ञान की सत्यता के ऊपर प्रकाश डाला और कहा कि आपके सामने परमात्मा के बिन्दी स्वरूप का ज्ञान है और परमात्मा के दिव्य अवतरण का कार्य अभी चल रहा है। इस कारण आपके सामने एक अवसर तो यह है कि आप बिन्दी स्वरूप के ज्ञान को समझकर परमात्मा द्वारा दिये जा रहे ईश्वरीय ज्ञान को धारण करने का प्रयत्न करेंगे तो परमात्मा द्वारा प्रस्थापित नये विश्व में श्रेष्ठ पद प्राप्त कर सकेंगे। दूसरा अवसर यह है कि अगर आप परमात्मा का सत्य परिचय प्राप्त होते भी अपने धर्म और उसकी विचारधारा में दृढ़ रहते हैं तो नये कल्प के अंदर जब आपके धर्म की स्थापना का स्वर्णयुग होगा तब उसमें आपको श्रेष्ठ पद मिलेगा। इस प्रकार आपके सामने दो विकल्प हैं। एक-दो दिन काफी चर्चा हुई। हमने अनुभव किया कि वे अपने विचारों में बहुत पक्के थे। उन्होंने समझा कि ब्रह्माकुमारी के ज्ञान से सिद्ध होता है कि हमारी संदेशी बहनों द्वारा हमें जो संदेश मिलते हैं, वे सत्य हैं और उन्होंने अपने धर्म में ही अपनी पक्की श्रद्धा बनाये रखी। इस प्रकार से शिवबाबा ने हमें जापान के शिंटो धर्म तथा ताओ धर्म की स्थापना का कार्य आने वाले कल्प में कैसे होगा, उनका विश्व विद्यालय के साथ संबंध कैसे होगा, इसका अनुभव कराया।

मैं समझता हूँ कि हमारे अन्य भाई-बहनों का भी ऐसा अनुभव रहा होगा कि शिवबाबा कैसे अन्य धर्मों की स्थापना का अपना दिव्य कर्त्तव्य करते हैं। परमात्मा के इस दिव्य कार्य को समझने से हमें मालूम चलता है कि कल्पवृक्ष के चित्र का वास्तविक रहस्य क्या है, तब समझ में आता है कि सभी धर्मों के भाई-बहन हमारे ही कल्पवृक्ष से जुड़े हुए हैं, हम एक पिता की संतान हैं। इस प्रकार से धर्मभेद दूर हो जायेंगे तथा सतयुग में एक सतधर्म की स्थापना होगी।

जापान की इन दोनों संस्थाओं के अनुभव से परमात्मा के एक अन्य

दिव्य कर्त्तव्य का विशेष अनुभव हमें हुआ। परमात्मा को दिव्य दृष्टि दाता कहते हैं जिसके परिणामरूप प्यारे ब्रह्मा बाबा को पहले-पहले विनाश और स्थापना का साक्षात्कार हुआ और बताया गया कि विश्व परिवर्तन के कार्य की ज़िम्मेवारी आपको उठानी है। जापान की दो संस्थाओं को भी दिव्य दृष्टि द्वारा शिव पिता परमात्मा के स्वरूप और नई सृष्टि की स्थापना की विधि के बारे में ज्ञान मिला। गीता में भी महावाक्य लिखे हैं कि दिव्य दृष्टि का दाता मैं हूँ और उस दिव्य दृष्टि के आधार पर ही ग्यारवें अध्याय में अर्जुन को विराट रूप का साक्षात्कार हुआ। जापान की संस्थाओं और हमारी संस्था में बहुत फर्क है। अपने विश्व विद्यालय में शिवबाबा स्वयं अवतरित होकर ब्रह्मा मुख द्वारा और फिर गुलज़ार दादी के मुख द्वारा ज्ञान देते हैं और आकर हम बच्चों को एडॉप्ट करते हैं और स्वर्ग के वर्से के लायक बनाते हैं। इस प्रकार हमारा परमात्मा के साथ डायरेक्ट संबंध होता है जबकि जापान की संस्था को परमात्मा दिव्य दृष्टि द्वारा या हिमालय के पत्थर के माध्यम से या लंबे कपड़े पर ब्रश द्वारा लिखत रूप में अपना परिचय देते हैं अर्थात् वहाँ पर परमात्मा का दिव्य अवतरण नहीं होता परंतु संदेशियों के माध्यम से परमात्मा अपना कार्य करते हैं और उसी संदेश द्वारा निमित्त बनी आत्माओं को द्वापरयुग के बाद इस सृष्टि रंगमंच पर अपने धर्म की स्वर्ण अवस्था में आने का सौभाग्य मिलता है जबकि हमारा सृष्टि रूपी रंगमंच पर आने का समय सृष्टि की शुरूआत से होता है। हम भक्ति से पूर्ण रूप से निवृत्ति ले लेते हैं और हममें ईश्वरीय ज्ञान की पराकाष्ठा होती है जबकि इन दोनों संस्थाओं में भक्ति से पूर्ण रूप से निवृत्ति नहीं होती है और उसी के कारण वहाँ पर ईश्वरीय ज्ञान की पराकाष्ठा नहीं होती। इसलिए वे सब आत्मायें द्वापर युग के बाद जब भक्ति की शुरूआत होती है, तब सृष्टि रंगमंच पर आ सकती हैं।

इस प्रकार से देखा जाये तो बाबा ने हम दोनों द्वारा वैश्विक धर्मस्थापक के अपने रूप का परिचय कराया। निवेदन है कि अन्य संस्था का इस प्रकार का जिन्हें अनुभव हुआ हो तो हमें लिखें। इससे, शिवबाबा सभी धर्मों का स्थापक कैसे है, उसे सिद्ध करके शिवबाबा को सर्वश्रेष्ठ धर्मस्थापक के रूप में प्रसिद्ध कर सकते हैं। अब तो जापान, चीन में ईश्वरीय सेवायें शुरू हो गई हैं। कई बाबा के छिपे हुए रत्न जो सतयुग से सृष्टि ड्रामा में आयेंगे, वे वहाँ से निकल आयेंगे। ❖

संजय की कलम से..पृष्ठ 4 का शेष...

जानने पर आप इस निष्कर्ष पर सहज ही पहुँच सकेंगे कि अपने उस अनादि एवं अविनाशी करुणामय गुण के अनुरूप तथा अपने उस ईश्वरीय वचन के अनुसार वे वर्तमान कलियुग के अंत (वर्तमान धर्मग्लानि) के समय भी अपना ईश्वरीय कर्त्तव्य कर रहे हैं। वे अब पुन: प्रजापिता ब्रह्मा द्वारा ईश्वरीय ज्ञान, योग, दिव्य गुण, पवित्रता, शान्ति, आनन्द, शक्ति रूप अनमोल वरदान दे रहे हैं। जो इस रात्रि में आध्यात्मिक अर्थ में जागेगा, वही इन वरदानों को पायेगा। जो अब ब्रह्मचर्य रूप व्रत का पालन करेगा वही उन द्वारा मुक्ति और जीवन्मुक्ति रूपी कल्याण का भागी बनेगा।

आप देखेंगे कि अन्य किसी महात्मा के जन्मदिवस पर लोग न तो निर्जल उपवास करते हैं, न ही रात्रि भर जागते हैं, न ही वे उसकी प्रतिमा का पूजन करते हैं और न ही उसकी प्रतिमा गोल-मोल आकृति की होती है। एक शिव ही के जन्मोत्सव की यह विशेषता है। शिव की प्रतिमा ही शारीरिक आकृति से रहित है क्योंकि शिव अशरीरी परमपिता का नाम है और यह प्रतिमा उस ज्योतिबिन्दु ही की प्रतिमा है जो सारे विश्व से अज्ञान-रात्रि का अंत करते हैं तथा सभी आत्माओं को जगाते हैं। ❖

'पत्र' संपादक के नाम

अक्टूबर, 2012 अंक में 'बुढ़ापे का भी आनंद लीजिए' आलेख एक सकारात्मक दृष्टिकोण है। जीवन के हर पल का आनंद लेना ही सफल जीवन का प्रमाण है। इसी अंक में 'मांसाहार के नुकसान' लेख भी वैज्ञानिक ढंग से लिखा हुआ, तथ्यपूर्ण और जानकारी-पूर्ण है। ज्ञानामृत के अंक परमात्मा पिता के मार्ग की ओर अग्रसर करने के साथ-साथ पाठकों की बौद्धिक क्षुधा भी शांत करते हैं।

– मनोहर 'मंजुल',
पिपल्या-बुजुर्ग (म. प्र.)

नवम्बर, 2012 अंक में 'मर्दानगी या कायरता' लेख सबसे अच्छा लगा। लेखिका की लेखनी रूपी शेरनी ने घनघोर गर्जना की है। ऐसी गर्जना से नारी जाति का उत्थान अवश्य होगा। सम्पादकीय लेख 'आध्यात्मिकता और आधुनिकता' भी गहन भावों से भरा हुआ है। सच है, आधुनिकता, आध्यात्मिकता के बिना विकलांग है। 'समय की पहचान' तथा 'समस्त प्रतिभाओं का अजस्र स्त्रोत मौन' ये लेख तो अन्तर्मन की गहराइयों को छू गये। लेखकों के चिंतन, मनन, विषय, भाषाशैली को मेरा नतमस्तक।

– ब्र.कु. स्वदेश, कुरूक्षेत्र

नवम्बर अंक के 'समय की पहचान' लेख ने तो जैसे मुर्दे में जान ही डाल दी हो। लेखक ने बड़े ही मार्मिक ढंग से समय की पहचान और परिवर्तन के समय को दर्शाया है जो कि आत्मा को तीव्र गति से पुरुषार्थ करने की प्रेरणा दे रहा है। ज्ञानामृत पत्रिका हम सबको पावन श्रेष्ठचारी बनने में काफी मदद कर रही है।

– ब्र.कु. नन्दकिशोर, हरदोई

दिसम्बर,2012 अंक में संजय की कलम से ''योग मार्ग में विघ्न और निवारण '' लेख बहुत अच्छा महसूस हुआ। संजय जी हर एक दिल की समस्या समझकर समाधान देते हैं। परमात्मा से मिलन अथवा योग में बहुत विघ्न आते हैं। यह लेख पढ़कर ज्ञान मंथन किया, आपस में चर्चा की तो चिन्तन में आया कि मैं तो इस देह से न्यारा हूँ, फिर दैहिक नाते मुझ आत्मा को कैसे बांध सकते हैं? मैं ज्योति-बिन्दु आत्मा हूँ, मैं परमपिता परमात्मा की संतान हूँ, ऐसा निश्चय कर भटकते हुए मन को परमपिता की ओर ले जायें। इससे बहुत-बहुत खुशी और आनंद प्राप्त होता है।

– त्र्यंबक.द.मामीडवार, नांदेड

रूहानियत से भरपूर ज्ञानामृत पत्रिका में बहुत ही सुन्दर लेख पढ़ने को मिलते हैं। 'आध्यात्मिकता और आधुनिकता', 'सच्ची दीवाली कैसे मनाएँ ' आदि सभी लेख बहुत अच्छे लगे। मेरी भाषा पंजाबी है पर फिर भी मुझे ज्ञानामृत पढ़ने की लगन है।

– अमरसिंह, ओलख (पंजाब)

दिसंबर अंक में रमेश भाई का लेख पढ़ा तो तन-मन को भा गया। सन् 1971 में रमेश भाई व साथियों ने विदेश सेवा का प्रारंभ किया और चार चांद लगा दिये। फलस्वरूप, आज ईश्वरीय सेवा में ग्लोबलाईजेशन हो गया है। उनकी महानता व सेवा से प्रेरणा पा के मुझे बहुत खुशी हुई।

– ब्र.कु. अजय, दीव

ज्ञानामृत पत्रिका में सबसे अच्छा लगता है सम्पादकीय लेख। हर पृष्ठ के नीचे दिये गए स्लोगन बहुत ही नैतिक बल देते हैं। लगता है, मेरे हर प्रश्न का उत्तर उन स्लोगन्स में है। कितना आश्चर्य है! आज जहां लोग लोभ और स्वार्थ में फंसे दिखाई देते हैं वहां आप जैसे सकारात्मक प्रवृत्ति वाले लोग शांति का दान कर रहे हैं नि:स्वार्थ भाव से। आपके आश्रम का वातावरण गुरुकुल जैसा लगता है। आप शांति का संदेश सभी जगह पहुंचाते रहें, स्वस्थ रहें! मस्त रहें!

– अर्चना राय, कानपुर (उ. प्र.)

सेवा का अर्थ है दूसरे को आत्मिक सुख देना

वेलेन्टाइन डे पर विशेष

प्रेमः एक महान गुण

● ब्रह्माकुमार नरेश, मुजफ्फरनगर

संसार में प्राणियों का अपने जीवन से प्रेम करना, प्रेम का संकीर्णत्तम रूप है और दैहिक अस्तित्व से ऊपर उठ कर संसार के सारे प्राणियों के प्रति बेहद की करुणा व कल्याणमय वृत्ति रखना, शुभ भावना, शुभ कामना रखना प्रेम का व्यापक रूप है। परन्तु यह तब संभव है जब अपने अहंकार या देह-अभिमान को मिटा दिया जाए। सार्वभौमिक प्रेम की वृद्धि में ही मनुष्य का आध्यात्मिक विकास, समाज-कल्याण व विश्व शान्ति निहित है। प्रेम हृदय की तो श्रेष्ठतम शक्ति है परन्तु मस्तिष्क की श्रेष्ठतम दुर्बलता है। हृदय के प्रेमी ज्ञान (आत्मिक) चाहते हैं और मस्तिष्क के ज्ञानी, प्रेम (सांसारिक) चाहते हैं। सच्चा प्रेम अपने को समर्पित करता है परन्तु सांसारिक प्रेम अपनों के प्रति ही समर्पित होता है। जब दीया जलता है तो यह नहीं देखता कि किसे-किसे प्रकाश देना है। जब फूल खिलता है तो वह भी नहीं देखता कि किसे खुशबू देनी है। उसी प्रकार, जब प्रेम सच्चा होता है तो यह नहीं देखता कि किससे प्रेम करना है और किससे नहीं। प्रेम है ही प्रेम तब, जब यह सर्व के प्रति हो।

शिवबाबा हैं विश्व कल्याणकारी

जर्मन कवि 'गेटे' (Goethe) के अनुसार प्रेम गरीब की झोपड़ी में बसता है और अमीर के महलों में खो जाता है। उनका भाव यह था कि झोपड़े में बैठे युगल का आपसी प्रेम एक और एक मिल कर ग्यारह हो जाता है परन्तु अमीर के महल में उन दो का प्रेम दो-बटा-ग्यारह (2/11) हो जाता है अर्थात् प्रेम भौतिकता में बंट जाता है। गणित में एक और एक जुड़ कर दो होते हैं और मिल कर ग्यारह हो जाते हैं। परन्तु प्रेम में तो एक और एक जुड़ कर 'एक' ही होता है। ब्रह्माकुमार-कुमारियां लाखों में हो कर भी एक की ही हैं और एक ही हैं। कहा जाता है कि ऐसी दुनिया आने वाली है जहां एक धर्म, एक राज्य व एक भाषा होगी। भाव यह है कि सबके शरीर अलग-अलग होते हुए भी सभी एक ही धर्म के होंगे। अभी जो विभिन्न देशों के मध्य सीमा-रेखाएं हैं वे नहीं होंगी, पूरा विश्व एक ही देश होगा और सभी एक ही भाषा में बातें करेंगे। ऐसा होना प्रेम की शक्ति से ही संभव है। **अभी शिव बाबा ज्ञान की शक्ति से विश्व-कल्याण का कार्य कर रहे हैं और कल्याण का प्राण है प्रेम। मकान की चिनाई करने के लिए यदि रेत में जल सीमेन्ट न मिलाया जाए तो निर्माण नहीं हो सकता। उसी प्रकार यदि विश्व-निर्माण के कार्य में शिवबाबा ज्ञान के जल व प्रेम के सीमेन्ट का उपयोग न करें तो विश्व-निर्माण नहीं हो सकता। शिव बाबा हैं सबसे बड़े राजमिस्त्री व विश्वकल्याणकारी।**

शिवबाबा का काम है समझदार बनाना

प्रेम एक ऐसा व्यापक गुण है जिसे आगे करके ही कई विकार अपना प्रभाव जमाते हैं। **काम विकारी** प्रेम के आवरण में कामचिता पर चढ़ते हैं। एक **लोभी** भी अपने लोभ की पूर्ति के लिए दिखावटी प्रेम प्रदर्शित करता है। **मोह** की बुनियाद ही प्रेम पर रखी जाती है। एक प्रेमी यदि किसी अहंकारी से प्रेमपूर्वक व्यवहार करता है, तो **अहंकारी** इसे भी अपनी झूठी योग्यताओं का अभिनन्दन समझ फूल कर कुप्पा हो जाता है। **ईर्ष्यालु** दिखावटी प्रेम करता है, जिसमें धोखा है। **एक धोखेबाज या ठग**, प्रेम के आवरण में ही ठगी करता है। **आलसी** व अलबेले व्यक्ति को अपनी इन्द्रियों से इतना प्रेम होता है कि वह इन्हें हमेशा निष्क्रिय ही रखना चाहता

है। विकारों से जुड़े प्रेम के ये स्वरूप वास्तव में प्रेम नहीं हैं बल्कि माया का मीठा आवरण हैं। तभी तो कहा जाता है, 'अहो माया, तेरी लीला अपरम्पार है' परन्तु मूर्ख मनुष्य माया के इन रूपों को समझना नहीं चाहता। **माया का काम ही है 'प्रेम-सा-रूप' बना कर मूर्ख बनाना और शिवबाबा का काम ही है 'प्रेम-स्वरूप' बना कर 'समझदार' बनाना।**

तीव्र प्रेम ही भक्ति है

प्रेम – जाति, कुल, कुलीनता, धन आदि कुछ नहीं जानता। प्रेम तो बस बरसना जानता है, छलकना जानता है, विभोर होना जानता है। प्रेम एक सुगन्ध है जो चित्त को प्रसन्नचित्त रखती है। प्रेम इन्द्रधनुष है जो संसार के प्राणियों के गुणों को बहुरंगी करके देखता है। प्रेम एक मिठास है जिसका जितना भी स्वाद लो, यह बढ़ता ही जाता है। **प्रेम एक पूजा है जो परमात्मा के करीब लाता है।** परमात्मा से यदि प्रेम है तो मन्दिर-मस्जिद या गुरुद्वारे जाने की ज़रूरत नहीं होती। यदि उससे प्रेम नहीं है तो मन्दिर-मस्जिद या गुरुद्वारे में जाने का कोई फायदा नहीं। **ईश्वर के प्रति तीव्र प्रेम ही भक्ति है और निःस्वार्थ प्रेम रहित भक्ति मात्र एक दैनिक रस्म है। लौकिक प्रेमी एक-दूसरे से अपने प्रेम का इज़हार करते हैं, अपने-अपने प्रेम का विश्वास दिलाते हैं परन्तु सच्चा प्रेम तो वह है जो मूक हो और दूसरे को स्वतः अनुभव कराए, एहसास कराए। एस.एम.एस., ई-मेल, मोबाईल व पत्रों से व्यक्त प्रेम में जिस्मानी भाव होता है जबकि प्रेम का स्वरूप ही है 'रूहानी'। लिख कर व्यक्त किया गया प्रेम 'बासी' होता है, शब्दों से व्यक्त प्रेम 'साधारण' होता है, दृष्टि से अभिव्यक्त प्रेम 'रूहानी' होता है और हृदय से उमड़ा प्रेम 'ईश्वर-प्रदत्त' होता है।**

प्रेम ऊपर उठाता, काम नीचे गिराता

सूफी विचारधारा में भगवान और भक्त के बीच के सम्बन्ध को 'इश्क हकीकी' कहा गया है जबकि भक्त और संसार के बीच के सम्बन्ध को 'इश्क मजाजी' कहा गया है। पहले वाला होता है 'दिव्य' और दूसरा है प्रपंच। **इश्क माना 'प्रेम' और सच्चा प्रेम वह है जो भगवान और संसार दोनों के साथ समरूपता रखे। यदि भगवान से प्रेम हो और उसकी रचना से प्रेम न हो, तो ऐसे 'इश्क मतलबी' के प्रेम में मिठास व शक्ति नहीं होती। प्रेम ऊपर उठाता है और 'काम' नीचे गिराता है। प्रेम, दूसरे को बदलने का प्रयास नहीं करता बल्कि दूसरे में स्वतः बदलाव आता है। बदलाव अर्थात् प्रेम की शक्ति से स्वयं का 'बद अलाव' हो जाए अर्थात् बुराइयां जल कर नष्ट हो जाएँ।** शिवबाबा के प्रेम से हमारा बद + अलाव ही तो हो रहा है। बिना प्रेम के संबंध 'छुईमुई' के पौधे के समान हैं और जहां प्रेम है वहां आंधी-तूफान भी 'संबंध'को हिला-डुला नहीं सकता।

प्रेम, क्रोध से ज़्यादा प्रभावी

प्रेम एक ऐसा आत्मिक गुण है जिसमें कई अन्य गुण समाए होते हैं जैसे कि त्याग, सहनशीलता, शुभ भावना-शुभ कामना आदि। प्रेम सभी प्राणियों में पाया जाता है, चाहे कोई मांसाहारी पशु ही क्यों न हो। परन्तु पशुओं का आपसी प्रेम अपनों के प्रति होता है जबकि ज्ञानवान मनुष्य दूसरों के प्रति भी प्रेम-भाव रखते हैं। मिसाल के तौर पर, बिल्ली जब अपने बच्चे को मुंह से उठा कर सुरक्षित स्थान पर ले जाती है, तो उसके दांत बच्चे को घायल नहीं करते, क्योंकि बिल्ली का प्रेम दांतों के दबाव पर नियंत्रण रखता है। एक मां भी जब क्रोध में अपने बच्चे को मारती है, तो उसका आन्तरिक प्रेम, बाह्य क्रोध को घातक नहीं होने देता। मां क्रोध में होते हुए भी यह ध्यान रखती है कि उसकी मार से बच्चा जख्मी या चोटिल न हो जाए। इससे यह सिद्ध होता है कि आत्मिक गुण 'प्रेम' 'क्रोध' विकार से ज़्यादा प्रभावी है।

प्रेम सहित सेवा फलीभूत

प्रेम अपने वास्तविक स्वरूप में सभी की कुशलता की कामना करता है। वह दूसरों के कष्ट से द्रवित हो

जाता है और उनकी मदद करने को तत्पर होता है। **यदि कोई अपने पड़ोसी से प्रेम नहीं करता जिसे कि वह रोज़ देखता है, तो वह उस परमात्मा से कैसे प्रेम कर सकता है जिसे उसने कभी देखा ही नहीं है।** प्रेम का सेवा से निकट का सम्बन्ध है। प्रेम-रहित सेवा कभी फलीभूत नहीं होती। एक व्यक्ति पैदल कहीं जा रहा था। उसके आगे एक गड़रिया भेड़ों के झुण्ड के साथ जा रहा था। गडरिये ने अपने कन्धे पर एक मेमना बैठा रखा था। रास्ते में तालाब दिखाई दिया तो उस मेमने को नीचे उतार कर नहलाया, फिर बड़े प्यार से कपड़े से उसे पोंछा और फिर उसे हरे-हरे पत्ते खिलाए। उस व्यक्ति को यह सब देख उत्सुकता हुई। उसने गडरिये से कहा कि तुम्हारी भेड़ों में तो मेमने और भी हैं, फिर इस मेमने पर इतने मेहरबान क्यों हो? गडरिये ने कहा कि यह मेमना सबके साथ नहीं चलता और दूसरी दिशा में जाने लगता है। इसे मैं अपने प्रेम से बांध रहा हूं। आप देखना, अब यह मेरे साथ-साथ ही चलेगा। फिर ऐसा ही हुआ भी। तो जिससे हम प्रेम करते हैं, वह हमारे साथ चलना शुरू कर देता है। ब्रह्माबाबा ने भी हमें मात्र ज्ञान की पालना नहीं दी बल्कि प्रेम की पालना भी दी है, जो फिर हमें भटकने नहीं देता।

माँगें पूरी करते रहो

प्रेम व याद में गहरा रिश्ता है। जिससे प्रेम होता है, वह स्वत: याद आता है परन्तु जिससे कुछ प्राप्त होना हो, वह भी स्वत: याद आता है। पहली वाली याद है मिठास भरी और दूसरे वाली है स्वार्थ भरी। कहने को तो भगवान को दुनिया याद करती है परन्तु किस भाव से ? आज दुनिया का चलन मानो यह है कि प्रभु, तुम आओ या न आओ परन्तु मेरी मांगें पूरी करते रहो। दुनिया को उसके ज्ञान-धन की कोई चाहत नहीं।

ईश्वरीय प्रेम है फूल

आज सांसारिक प्रेम माध्यम बन गया है सुख का और ऐसा सुख होता है शारीरिक व विनाशी। परन्तु ईश्वरीय प्रेम माध्यम है आनन्द का और आनन्द ही है अतीन्द्रिय-सुख अर्थात् गोपनीय प्रेम। जब प्रेम गोपनीय नहीं रहता, तो उसका आनन्द समाप्त हो जाता है। सांसारिक प्रेम है कांटा और ईश्वरीय प्रेम है फूल। ईश्वरीय प्रेम फिर जीवन को पलट देता है। स्व.रामधारी सिंह दिनकर ने कहा है –

पड़ जाता चस्का जब, मोहक प्रेम-सुधा पीने का,
सारा स्वाद बदल जाता है, दुनिया में जीने का।

प्रेम की खुशबू आचरण से फैलती है

आज पूजा-स्थलों में जिस प्रकार से प्रतिमाओं को प्रसाद खिलाने के लिए भक्त घण्टों लाईन में खड़ा रहता है, वह कई प्रश्न पैदा करता है। उसका जब नम्बर आता है, तो पुजारी जिस बेकद्री से यंत्रवत् प्रसाद प्रतिमा पर चढ़ा कर भक्त को आगे धकेल देता है, उससे प्रतिमा नहीं बल्कि पुजारी के 'पत्थर-हृदय' होने का आभास होता है। परन्तु यह भक्त का पत्थर जैसा मस्तिष्क ही है, जो उसे प्रसाद चढ़ाने की इस प्रेम-विहीन प्रक्रिया पर चिन्तन नहीं करने देता। वह परम्परावश प्राप्त रसहीन ईश्वरीय प्रेम का झाड़ तो संभाले रहता है परन्तु अपनी आत्मा में पड़े प्रेम के बीज को अंकुरित नहीं कर पाता। ईश्वरीय ज्ञान ही ईश्वरीय प्रेम को बढ़ाने का सशक्त साधन है। **प्रेम का बीज आत्मा में होता है परन्तु यह बीज अंकुरित संस्कार में होता है। प्रेम की कली हृदय में खिलती है और प्रेम की खुशबू आचरण से फैलती है। गुजर जाने के बाद भी दुनिया उसके आचरण को याद रखती है।**

कहते हैं कि फलाने का कष्ट देख कर मेरा मन द्रवित हो गया। द्रवित अर्थात् प्रेम का द्रव अन्दर होना। द्रवित मन ही स्थूल द्रव्य (धन) दे कर दूसरे की मदद कर सकता है। सार यही है कि अन्दर प्रेम का दरिया कभी सूखने न पाए और यह तब संभव है जब प्रेम के सागर शिव से दूरियां न हों। आइए, अपने दरिया को उस प्रेम के सागर से भरपूर करें ताकि दरिया-दिल हो कर दूसरों की प्यास बुझा सकें।

❖

परमात्म प्यार द्वारा सूली बनी कांटा

● ब्रह्माकुमारी रमिला पटेल (काकी), जिम्बाब्वे (अफ्रीका)

हम आत्मायें सृष्टि ड्रामा में पार्ट बजाने के लिए शरीर धारण करती हैं, इसे शारीरिक जन्म कहा जाता है। यह जन्म तो सभी का होता है परंतु इसी शारीरिक जन्म के बाद ज्ञान के द्वारा होने वाला दूसरा जन्म आध्यात्मिक जन्म कहलाता है। ऐसा जन्म कुछेक भाग्यशाली आत्माओं का होता है। मेरा आध्यात्मिक जन्म सन् 1974 में हुआ, तब रमेश भाई, ऊषा बहन, दादी जानकी, वेदांती बहन, चंद्रू बहन – ये सब अफ्रीका में ईश्वरीय सेवा अर्थ आये थे। इन महारथियों का आगमन सर्वप्रथम लुसाका (जाम्बिया) में हुआ। मैं अपने बहुत बड़े परिवार के साथ इस ईश्वरीय मार्ग पर चल पड़ी। लौकिक परिवार में मुझे और मेरे युगल को सब 'काकी-काका' कहते थे, इसलिए हम यज्ञ में भी 'काकी-काका' के नाम से जाने जाते हैं। इस सत्य मार्ग पर चलते हुए बहुत-सी सामाजिक और शारीरिक परीक्षायें आईं परंतु बाबा के साथ से सब सूली से कांटा-सी प्रतीत हुईं।

अचानक बढ़ी शुगर

बात डेढ़ वर्ष पुरानी है, अचानक शरीर की शुगर बढ़ गई और बहुत तेज़ बुखार हुआ जिसके चलते मुझे अस्पताल में दाखिल करवाया गया। डॉक्टरों ने कहा कि इसे निमोनिया और छाती में टी.बी. की बीमारी है। कई तरह की दवाइयों और इंजेक्शनों से मेरा इलाज शुरू किया गया परंतु शारीरिक स्थिति हर दिन गिरती जा रही थी, खाना गले के नीचे नहीं जाता था।

बीमार हो जाओगी तो क्या करोगी?

एक दिन अचानक मैं बेहोश हो गई और पाँच दिन के बाद होश आया। इन पाँच दिनों में बाबा ने जो अनुभव करवाये, उन्हें बताने के लिए मेरे पास शब्दों की कमी है। मुझे अनुभव हुआ कि मैं बाबा संग सूक्ष्मवतन में बैठी इस ड्रामा स्टेज को निहार रही हूँ। बाबा हाथ पकड़ साथ-साथ चलते हुए कहते हैं, बच्ची, चिंता मत करो, मैं हूँ ना! **जब चेतना आई तो शारीरिक स्थिति तो वैसी ही थी परंतु आत्मा में बाबा ने इतना बल भर दिया कि रोग भी एक साइड सीन लगने लगा। मैं बाबा के प्यार और साथ में आनंदित और मस्त थी।** मुझे आज भी याद है जब हम इस ईश्वरीय ज्ञान में आये तो नियम पालन करने में सिर्फ चार दिन लगे थे। लोगों ने कई तरह के सवाल किये थे कि अभी तो ठीक है परंतु कभी बीमार हो जाओगी तो क्या करोगी? क्या खाओगी? कहाँ जाओगी? परंतु मुझे पहले पल से

ही बाबा पर दृढ़ निश्चय था और देखो, **जब परिस्थिति आई तो मेरे प्यारे बाबा ने और दैवी परिवार ने हर कदम मुझे साथ दिया।**

'लाइलाज' सुनकर मुसकराई

बीमारी के चलते मेरे शरीर से पाइप द्वारा गंदा पानी निकाला गया। डॉक्टरों के द्वारा दुबारा चेकअप में पता चला कि टी.बी. बहुत तेजी से बढ़ रही है, मेरे वजन में निरंतर फर्क पड़ने लगा और घट कर 45 किलो रह गया। डॉक्टरों ने कहा, इसका कोई स्थायी इलाज नहीं है परंतु फिर भी हम प्रयास कर सकते हैं, बाकी ठीक करना, न करना भगवान के हाथ में है। यह सुनकर मैं मुसकराई क्योंकि मैं तो बहुत पहले ही अपना सब कुछ प्यारे बाबा के आगे समर्पण कर चुकी हूँ। मेरा उपचार शुरू हुआ और दवाइयों के कई दुष्प्रभाव भी शुरू हुए जैसे कि चक्कर आना, शरीर का काँपना, जी मतलाना, बहुत

नींद आना और भूख न लगना परंतु, इतना मुश्किल वक्त कैसे बीता, पता ही नहीं लगा। ऐसे लगा जैसे बाबा ने अपने हाथों में उठा लिया है। मेरे नैरोबी के अलौकिक परिवार ने मुझे इतना स्नेह और साथ दिया जो मैं स्वस्थ हो पुन: ज़िम्बाब्वे में बाबा के घर सेवा कर रही हूँ।

मन में बस एक ही धुन थी कि मुझे प्यारे बाबा से मिलने मधुबन तो जाना ही है और बाबा ने मेरा यह संकल्प भी पूरा किया। मैंने अनुभव किया कि बाबा ने पिछले काफी समय से अशरीरीपन की ड्रिल का जो अभ्यास कराया, उस अभ्यास ने बीमारी के वक्त में मेरा बहुत साथ दिया। इस अभ्यास द्वारा शरीर के प्रभाव से परे रही और परमात्म प्यार में झूलती रही। अंत में मैं प्यारे बापदादा और लौकिक-अलौकिक परिवार का बहुत-बहुत धन्यवाद देना चाहती हूँ।

चेहरे और चलन से सेवा

ब्रह्माकुमारी राज बहन, कान्दिवली (प.), मुम्बई

एक ईश्वरीय सेवा के कार्यक्रम में मैं मुम्बई से जम्मू जा रही थी। मेरे पास सेवा अर्थ सामान होने के कारण कुछ ज्यादा ही नग हो गए थे। सीट ऊपर होने के कारण मैं सोच रही थी कि आने वाले सहयात्रियों से निवेदन करूँगी कि मुझसे नीचे की सीट बदली करलें। पहले तो मैं बिल्कुल अकेली थी पर जब वापी स्टेशन आया तो यात्रियों का एक समूह छोटे तूफान की तरह अन्दर आया। वे विद्यार्थी थे, जो हिमाचल प्रदेश की यात्रा पर जा रहे थे। उनमें से अधिकतर की टिकट वेटिंग वाली थी और सामान भी ढेर था। यात्री-डिब्बे में इतना सामान भर गया था कि इधर से उधर जाना भी मुश्किल था।

मैं एक कोने में शान्ति से बैठ गई और साक्षी हो उन विद्यार्थियों का खेल देखने लगी। उनके पास सोने के लिए सीट तो थी नहीं और दिन-रात का सफर पूरा करना था इसलिए उनका खाना, गाना और नाचना निरन्तर चलने लगा। उनका हँसना-बहलना इतना अति में था कि उन्हें खुद लगा कि मैं उनसे परेशान हो रही हूँ इसलिए बीच-बीच में मुझे ''सॉरी'' कहते और सहज भाव से मेरे मुख से निकलता, कोई बात नहीं। मैं समझ रही थी कि इनको समय गुजारने के लिए कुछ तो करना ही है। चार समय का भोजन होते हुए भी मैं दो ही समय खा सकी क्योंकि आराम से बैठने की सुविधा नहीं थी और अब मैंने सीट बदलने के बजाए ऊपर जाना ही उचित समझा। लेकिन रात भर शोरगुल चलते रहने के कारण मैं सो नहीं सकी। इसी बीच कई बार उनके शिक्षक भी चक्कर लगाने आए और बच्चों के इस अन्दाज़ को देखते हुए मेरे हाव-भाव भी देखते रहे।

मैं मन ही मन सोचती रही कि इन बच्चों को ईश्वरीय ज्ञान से अवगत कराऊँ जिससे इनका समय भी ठीक गुज़रे और इन्हें कुछ अच्छा सीखने को भी मिले परन्तु उन्होंने मुझे ऐसा अवसर ही नहीं दिया। सफर पूरा होने से कुछ समय पहले, एक शिक्षक आकर मेरे सामने की सीट पर बैठ गए। वो मुझ से कुछ पूछते, उससे पहले मैंने ही पूछ लिया, क्या आपने कभी ब्रह्माकुमारीज़ का ज्ञान सुना है? उनका उत्तर था, '' सुना तो पहले भी था परन्तु देखा आज।'' फिर कहने लगे, बीच-बीच में मैं आकर देखता था कि आपको बच्चों से कुछ परेशानी हो रही होगी परन्तु आपने चेहरे से ऐसा कुछ भी प्रकट नहीं किया। यह सुनकर मैंने बाबा को धन्यवाद दिया इसलिए कि मैं जो सोच रही थी, मैंने बाबा की सेवा नहीं की, यह मात्र भ्रम ही था। जो सेवा हम बोल कर नहीं कर सकते, वह अपने चेहरे और चलन से कर सकते हैं। ❖

इस तन में जो ज्योति-स्वरूप आत्मा विराजमान है, वह परमपिता परमात्मा की संतान है जो वास्तव में दिव्य है और वह पहले जो देवता पद को प्राप्त थी। अत: हमें कभी भी अशुद्ध आहार को छूना तक भी नहीं चाहिए।

अन्तर्मन की ओर निवेश

● ब्रह्माकुमारी उर्मिला, शान्तिवन

हमारे समाज में बहुत-सी ऐसी महिलाएँ हैं जो एक साथ कई-कई ज़िम्मेवारियाँ उठाती हैं। घर-परिवार को सम्भालने के साथ-साथ कहीं राजनीति में, चिकित्सालय में, न्यायालय में, विद्यालय-महाविद्यालय में, कारपोरेट क्षेत्र में, उद्योगों में, सरकारी कार्यालयों में, व्यापार में सक्रिय भूमिका अदा करती हैं। स्पष्ट है कि दो क्षेत्रों (घर और बाहर) की ज़िम्मेवारियाँ उठाने वाली इन महिलाओं को कई बार अपनी इच्छा, भूख, प्यास, आराम को भी समर्पित करके इनको सम्भालना पड़ता है। सवाल यह है कि वे सबकी देखभाल करती हैं, ख्याल करती हैं, पर क्या स्वयं का उचित ख्याल रखती हैं, स्वयं को समय देती हैं, क्या स्वयं के लिए उपलब्धियों का निवेश करती हैं। हम जिस भी क्षेत्र में निवेश करते हैं वह उन्नत हो जाता है तो क्या वे अन्तर् (भीतर) की उन्नति के लिए कुछ करती हैं?

त्याग किसका करना है, यह ज्ञान ज़रूरी

जब हम यह प्रश्न उठाते हैं तो बहुत-सी महिलाएँ कहती हैं, महिला तो त्याग की मूर्ति है, वह तो जीती ही दूसरों के लिए है, वह कोई स्वार्थी थोड़े ही है जो अपने लिए करे? यह ठीक है, वह दूसरों के लिए जीती है पर जीती तो रहे अर्थात् तन और मन से शक्तिशाली तो रहे तभी तो दूसरों के लिए कुछ कर पाएगी। वह त्याग की मूर्ति है पर त्याग किसका करना है, यह भी तो ध्यान रहे। कहीं अपनी इच्छाओं का त्याग करते-करते हम अपनी शान्ति और शक्ति का त्याग तो नहीं कर बैठे? औरों को उबारने के प्रयास में कहीं खुद के उबरने की शक्ति तो नहीं खो बैठे? एक योद्धा युद्ध के मैदान में जाता है, सब कुछ छोड़कर, जान हथेली पर लेकर पर वह अपने अस्त्रों-शस्त्रों का त्याग तो नहीं करता, वे ही तो उसकी विजय के आधार हैं। हम भी इस कर्मक्षेत्र रूपी कुरूक्षेत्र में उतरे हुए हैं पर विजयी बनाने वाले दिव्य अस्त्रों को तो साथ में रखें। ये अस्त्र हैं स्थिरता, सकारात्मकता, धैर्य, एकाग्रता, स्वतन्त्रता, निष्पक्षता, आत्म-विश्वास, आत्मनिर्भरता, निर्भयता, आशावादिता, नम्रता, मिलनसारिता आदि-आदि।

आत्म-अवलोकन कब करेंगे?

एक प्रसिद्ध महिला से पूछा गया, आज आपका दिनभर का कार्यक्रम क्या है? उसने बताया, सुबह 10 बजे समाजसेवियों की मीटिंग में जाना है, 12 बजे नगरपालिका की मीटिंग में भाग लेना है, 2 बजे एक मंत्री जी की स्वागत-समिति में शामिल होना है, 4 बजे एक परिवारिक फंक्शन में जाना है, 6 बजे कन्या भ्रूण-हत्या रोकथाम रैली को सम्बोधित करना है, रात 9 बजे एक क्लब में जाना है। हमने कहा, **ये सब व्यस्तताएँ तो दूसरों के लिए हैं पर इनके बीच आपको अपने लिए समय कहाँ है? अपने से मिलन मुलाकात करना, अपना हालचाल पूछना, अपने अन्दर की टूट-फूट ठीक कर मन को शान्त, शीतल और सकारात्मक बनाना, थकी और मन्द पड़ी भावनाओं की मलहम-मालिश करना, आशा को उमंग की हवा देना, ये सब आप कब करेंगे?** यह ठीक है कि समाज में हमारा मान-मर्तबा, रुतबा है और हमें कई चीज़ों का अवलोकन करना होता है। कई कहते हैं, हमारे बगीचे का, मशीनों का, वस्त्रों की सेल का, नई ईंटों के भट्ठे का, नए कार्यालय का अवलोकन कीजिए। हमने अवलोकन किया पर सवाल यह है कि हम आत्म-अवलोकन कब करेंगे? हम दूसरों की व्यवस्थाओं की जाँच-परख करते हैं पर क्या हमारे भीतर सब कुछ व्यवस्थित है? पानी की सुराही सबको ठण्डा पानी पिलाती है पर कैसे? साधारण ताप वाली

सुराही में, साधारण ताप वाला पानी सारी रात रखा रहा। दोनों के संग ने एक-दूसरे को शीतल किया। रातभर की अन्तर्क्रिया के बाद सुराही शीतला बन पाई। यदि वह भी व्यस्तताओं के बीच इस अन्तर्क्रिया को समय ना दे तो तुरत-फुरत में शीतला के बजाए ज्वाला ही सिद्ध होगी। तो क्या मैं सचमुच भीतर से शीतल हूँ, भरपूर हूँ? शीतल सुराही बनने के लिए मुझे भी शीतलता से भरपूर करने वाले, नरम और कल्याणकारी भावों को जन्म देने वाले परमपिता परमात्मा के संग की ज़रूरत है। उस संग के प्रभाव में, ना चाहते भी अन्दर भर गई कटुता और कठोरता को मधुरता और कोमलता में बदलने की ज़रूरत है।

धन से केवल सतही सशक्तिकरत

कई बार यह सवाल उठाया जाता है कि नारी को आर्थिक रूप से सशक्त कर दिया जाए तो वह बहुत सारी समस्याओं से मुक्त हो, शान्ति से रह सकती है। यह बात आंशिक रूप से तो सत्य है पर पूर्ण सत्य नहीं। बहुत महिलाएँ आज आर्थिक रूप से सशक्त हैं। वे अपना कमाती हैं, मनचाहा खर्च करती हैं, सन्तान और घर के भौतिक स्तर को मनचाही ऊँचाइयाँ दे सकती हैं परन्तु यह स्वतन्त्रता और सशक्तिकरण भी सतही है, केन्द्र का नहीं। एक जानी-पहचानी आधुनिक, पढ़ी-लिखी महिला, जो अक्सर अवांछित व्यवहार से आहत हो जाती है और मुझसे समाधान मांगती है, को मैंने राजयोग सीखने की नेक सलाह दी। उसने यह कहकर मना कर दिया कि यह सब करने में बहुत समय का और थोड़े बहुत धन का खर्च हो जाएगा। चूंकि वह कमाती है, अकेली रहती है, तो मेरे मन में आया, यह इतनी धनाभाव वाली तो नहीं है जो ऐसा कह रही है। उसके नाते-रिश्तेदार तो उसके आगे-पीछे डेरा डाले रहते हैं और उससे यह कहकर धन लेते रहते हैं कि तुम तो अकेली हो, इतना धन-संग्रह कर के क्या करोगी, हमारे अमुक कार्य में सहयोग दो, अमुक में सहयोग दो और वह देती भी है। मेरे मन में आया, तो क्या अपने लिए, अपने अन्तर्मन के सशक्तिकरण के लिए थोड़ा धन और थोड़ा समय खर्च करना इसे भारी पड़ रहा है क्या? अभी इस बात को दस दिन ही बीते थे, एक रात दस बजे उसका फोन आ गया, बड़ी कमजोर-सी आवाज़ सुनाई दी। कह रही थी, बहन, आज ऑफिस में किसी के कटु बोल के कारण मन में ऐसा नकारात्मक चिन्तन चल पड़ा जो अब तक रुक नहीं रहा, नींद भी नहीं आ रही है, कोई शान्तिदायी बात सुनाओ जो मन शान्त हो जाए। मुझे उस पर स्नेह आया, रहम भी आया और चेहरे पर मुसकराहट भी आ गई। चूंकि उसकी दस दिन पहले की प्रतिक्रिया मुझे याद थी, मैंने हँसते हुए कहा, आपके बैग में और बैंक में हजार-हजार के कई कीमती नोट भरे पड़े हैं, किसी एक को निकालो और कहो, तुमको एकत्रित करने के लोभ में मेरे पास शान्ति एकत्रित करने का न समय है, न धन, मेरा सारा ध्यान तो तुम्हें अपना बनाने में लगा है, अत: थोड़ा मेरा सिर सहला दो, शान्ति दो और प्यारी-सी लोरी गाकर मुझे सुला दो। वह हँस पड़ी।

गुणों द्वारा मूल (केन्द्रीय) सशक्तिकरण

हम जानते हैं, यह काम नोट नहीं कर सकते। नोटों के बदले खरीदे गए नौकर भी यह काम नहीं कर सकते। यह काम वही कर सकता है जो पहले स्वयं हर स्थिति-परस्थिति में शान्ति और स्थिरता से भरा रहना जानता है। **इसलिए धन के सतही सशक्तिकरण के साथ-साथ हमें आन्तरिक गुणों से सशक्त होने की अत्यन्त आवश्यकता है। यही गुणों द्वारा मूल (केन्द्रीय) सशक्तिकरण है। इसकी विधि है 'राजयोग' जो प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय के हर केन्द्र पर नि:शुल्क सिखाया जाता है। हमारा अन्तर्मन जो अशक्त पड़ता जा रहा है, आर्थिक सशक्तिकरण का सच्चा आनंद लेने का आधार तो वही है। नहीं तो सब सुख के साधनों का ढेर होते भी हम कई बार उसी प्रकार तिलमिलाते हैं**

जैसे इत्र की बोतल में बन्द कोई जीव।

थकाता है अनवरत चिन्तन

हमें कार्य नहीं थकाता, कार्य का अनवरत चिन्तन थकाता है। हम जिसे कठिन कार्य समझते हैं उसकी कठिनाई का ही बार-बार चिन्तन करते हैं जिससे वह कठिनता और बढ़ जाती है। मान लीजिए, मुझे 5 किलोमीटर की उबड़-खाबड़ राह तय करनी है। यदि बार-बार उस दूरी का चिन्तन है तो वह मेरी चिन्ता बन जाएगी। पर मेरा ध्यान अपनी टाँगों की मजबूती पर केन्द्रित है तो वह मेरा आत्मविश्वास बन जाएगा। मुझे दूरी नहीं बल्कि मेरे पाँव दिखेंगे और अन्दर से आवाज़ आएगी, मेरे पाँवों के आगे उस दूरी का अस्तित्व ही क्या है? हमें कार्य पर नहीं, करने वाले पर यानि स्वयं पर एकाग्र होना है, इससे स्वयं का सशक्तिकरण होगा और कठिन, सरल हो जाएगा।

चेतना में उतारें

कार्यों को करने वाला कौन है? वह है हमारा सुदृढ़ संकल्प। यह संकल्प क्या है? आत्मा की एक शक्ति है। आत्मा क्या है? शरीर रूपी जड़ उपकरण के भीतर संचारित आध्यात्मिक करंट है। यह करंट ही शरीर की सारी क्रियाओं का आधार है। इसे ही दूसरे शब्दों में चेतना कहा गया है। इस चेतना में उतरने का अभ्यास करें। हम अधिकतर देह में उतरे रहते हैं, देह का मनन, चिन्तन, ध्यान करते हैं परन्तु चेतना को सशक्त करने के लिए हमें चेतना का चिन्तन करना है, यह कहां से आई है, क्या स्वरूप है, क्या-क्या इसमें शक्तियाँ भरी हैं आदि-आदि।

पहले वो करें जो आपकी पहुँच में है

हम अपने बच्चों को परीक्षा-पत्र हल करने के गुर(विधि) सिखाते हैं। हम कहते हैं, बेटा, प्रश्न-पत्र में 10 सवाल होंगे। उनमें से आप पहले वो हल करना जो आपको बहुत अच्छे से आते हैं। क्यों? क्योंकि हम जानते हैं, जो नहीं आते उनको याद करने की माथापच्ची में परीक्षा का समय ही चला जाएगा। जीवन की परीक्षा में पास होने का तरीका भी यही है। जो बातें हमारी पहुँच में हैं, जो कुछ हमारे वश में है, पहले उसे हम करें। **जो बातें हमारे वश में नहीं, उनको वश में करने की नाकाम कोशिश में हम वश वाली चीज़ों पर भी नियन्त्रण खो देंगे।** बच्चे होमवर्क नहीं करते, पतिदेव समय पर घर नहीं आते, कोई बात नहीं। इन पर लगाम लगाने के स्थान पर हम अपने मन पर लगाम लगायें जो बार-बार अशान्त होता है, झुंझलाता है, नकारात्मक सोचता है। कोई कह सकता है, इनका व्यवहार ही तो मन को अशान्त करता है, ये ठीक हो जाएँ तो मन स्वत: शान्त हो जाएगा परन्तु अपने मन के तो हम मालिक हैं, वह हर समय हमारे साथ है पर दूसरों के मन के तो मालिक नहीं हैं ना। इसलिए पहले जो मेरा है इसे मनाऊँ। पहले इस प्रश्न को हल करूँ, दूसरों के मन पर नियन्त्रण करने वाला प्रश्न फिलहाल छोड़ दूँ। आत्म-नियन्त्रण वाले प्रश्न हल होते ही बाकी सारे प्रश्न स्वत: हल हो जाएँगे।

❖

'श्रेष्ठ संकल्पों की कमाल' पृष्ठ 34 का शेष...

करो कि मैं मास्टर सर्व शक्तिवान हूँ, जिन प्रश्नों का उत्तर मुझे आता है, वही पूछे जायेंगे और मेरा सलेक्शन निश्चित है। मनोरंजक ढंग से उसकी नियुक्ति तुरन्त ही चीफ एक्जीक्यूटीव आफीसर के रूप में हो गई।

हे विजयी रत्नो... आप व्यर्थ से मुक्त बन सकते हो, आपमें वह सामर्थ्य है। अपने में मुरली से व स्वमान से श्रेष्ठ संकल्पों का बल भरो। तब आप संकल्प से ही बहुत सारे कार्य पूर्ण कर सकोगे। आपको उलझनों में या टेन्शन में रहने की ज़रूरत ही नहीं, स्वमान में स्थित होकर संकल्प करो और देखो, वही हो रहा है जो आप चाहते हैं। याद रहे, हमारे श्रेष्ठ संकल्पों के वायब्रेशन्स से संसार का वायुमण्डल बदलेगा, लोगों के दु:ख-दर्द समाप्त होंगे और आपको होंगे नित नये और श्रेष्ठ अनुभव। ❖

जैसी संगत वैसी रंगत

● अशोक गोंडलीया, राजकोट

मेरा लौकिक जन्म एक गरीब किसान के घर में हुआ। गरीब होते हुए भी मैं अपने माँ-बाप, दादा-दादी का बहुत ही लाडला बच्चा था। स्कूल में टीचर ने और घर में माता-पिता ने मुझे पढ़ाने के लिए बहुत मेहनत की जिस कारण पहली से चौथी क्लास तक मेरा पहला नंबर आता था।

कहावत है, संग तारे कुसंग बोरे। जब मैं पाँचवीं क्लास में पढ़ रहा था, तब कुसंगी दोस्तों के संग में आकर बीड़ी पीने और जुआ खेलने लगा अर्थात् बचपन से ही बुरी आदतों का शिकार हो गया। इसके कारण पाँचवी क्लास में नापास हो गया। फिर पढ़ाई छोड़ दी और माता-पिता ने खेत के काम में लगा दिया। फिर भी कुसंगी दोस्तों का संग नहीं छूटा। रोज रात को उन्हीं के साथ तंबाकू खाना, बीड़ी पीना और जुआ खेलना जारी रहा।

लोहे से भी सख्त संस्कार

एक बार पिताजी ने मुझे बीड़ी पीते हुए देख लिया, फिर बांस की लकड़ी से इतना मारा कि लकड़ी फट गई। अगली बार जुआ खेलते देख लिया तब लोहे के डंडे से ऐसा मारा कि डंडा टेढ़ा हो गया पर मैं फिर भी नहीं सुधरा। पिताजी ने लोहे के डंडे को तो सीधा कर लिया लेकिन मुझे सीधा नहीं कर पाये। कहने का भाव यह है कि मेरे संस्कार लोहे से भी सख्त हो गये थे।

तनख्वाह बुरी आदतों में उड़ाई

माता-पिता ने सुधारने के लिए मुझे राजकोट शहर में मौसी के घर भेज दिया। गाँव से शहर आने से स्थान परिवर्तन तो हुआ लेकिन संस्कार परिवर्तन नहीं हुआ। बुरी आदतें और भी बढ़ती गईं। इससे मौसी भी परेशान हो गई। फिर मौसी और माता-पिता ने तथा अन्य रिश्तेदारों ने यह फैसला किया कि इसको रोज पाँच बीड़ी पीने की छुट्टी दी जाये पर मैं पाँच बीड़ी से दस तक और दस से पूरा बंडल तक पीने लगा। गंदी-गंदी पिक्चर देखने लगा। जुआ भी अधिक खेलने लगा। जहाँ रहता था, वहाँ भी मेरे पंद्रह-बीस दोस्त बन गये। उन लोगों को भी मैंने बीड़ी पीना, तंबाकू खाना, गंदी फिल्में देखना, जुआ खेलना सीखा दिया। सबका मुखिया मैं ही था। मुझे सब डॉन कहने लगे। फिर मैं एक फैक्ट्री में नौकरी करने लगा। वहाँ तनख्वाह भी अच्छी थी। आठ से दस हजार तक मिलती थी। घर में आधी तनख्वाह से भी कम देता था। बाकी तनख्वाह बुरी आदतों में उड़ा देता था।

शादी से नहीं हुआ सुधार

एक बार मैं जुए में ज्यादा पैसे हार गया। फिर मैंने दूसरों से ब्याज पर कर्ज लेना शुरू किया और जुआ खेलता ही रहा। एक दिन ऐसा आया कि पूरी तनख्वाह कर्ज के ब्याज में ही चली जाती थी। मैंने माता-पिता को बताया। पिताजी ने सब कर्जा उतार दिया और फैसला किया कि इसकी शादी करा दो तो यह सुधर जायेगा। शादी हो गई, दो बच्चे भी हो गये लेकिन बुरी आदतें नहीं सुधरी।

मेरे दोस्तों में एक दोस्त है युनुस भाई। वो भी उस समय मेरे साथ फैक्ट्री में काम करता था। वो जहाँ रहता था, वहाँ पास में ही ब्रह्माकुमार भाई रहते थे। उन ब्रह्माकुमार भाइयों द्वारा युनुस भाई को परमात्मा पिता का सत्य ज्ञान प्राप्त हुआ। फिर युनुस भाई ने सात दिन का कोर्स किया। इससे उसका जीवन ही बदल गया। उसकी सब बुरी आदतें एक ही झटके में छूट गईं।

परिवर्तन देख मिली प्रेरणा

युनुस भाई का इतना बड़ा परिवर्तन देखकर मुझे और मेरे कुसंगी दोस्तों को अच्छा बनने की प्रेरणा मिली। फिर मुझे भी शिवबाबा का परिचय ब्रह्माकुमार भाइयों से मिला। मुझे बहुत अच्छा लगने लगा। मैंने भी सेवाकेन्द्र पर जाकर सात दिन का कोर्स किया। फिर निमित्त ब्रह्माकुमारी बहन ने कहा कि आप रोज़ ईश्वरीय ज्ञान तथा राजयोग का अभ्यास करेंगे तो आपका जीवन सर्वगुणों, सर्वशक्तियों से तथा सुख-

शांति से भरपूर हो जायेगा। सचमुच शिवबाबा ने कमाल कर दिया। मेरा सारा जीवन खुशहाल कर दिया। **मेरे लौकिक पिता मुझे मारकर भी न सुधार सके परंतु पारलौकिक पिता शिवबाबा ने बड़े ही प्यार से विकारों और व्यसनों से मुझे मुक्त कर दिया। आज मेरा जीवन धन्य-धन्य हो गया है। मैं रोज बाबा को याद कहता हूँ कि शिवबाबा, आपने जैसे मेरा जीवन बदल दिया वैसे मुझसे भी औरों का जीवन बदलने की सेवा कराइये अर्थात् मुझे भी सेवा के निमित्त बनाइये।** ❖

अच्चे का रक्षक भगवान

ब्रह्माकुमार गोविंद, नवसारी

बात सन् 1981 की है, मैं गुजरात बिजली बोर्ड (G.B.B) में भावनगर में अधीक्षक इन्जीनियर पद पर सेवारत था। अध्यात्म में बहुत रुचि होने के कारण प्रतिदिन ब्रह्माकुमारी सेवाकेन्द्र पर ईश्वरीय महावाक्य सुनने जाता था। हमारे स्टाफ को यह मालूम था, समय-समय पर उन्हें भी ईश्वरीय ज्ञान के पाठ पढ़ने को कहता था। वहां कर्मचारी संगठन (Labour union) तथा अधिकारी संगठन (Officers association) भी था।

एक बार अधिकारी संगठन के एक सदस्य का तबादला उसकी इच्छा अनुसार नहीं हुआ। इस कारण वे नाराज़गी प्रकट करने लगे। संगठन का अध्यक्ष काफी नामीगिरामी था। उन लोगों ने मुझ पर आरोप लगाया कि मैं संगठन के सदस्यों पर ब्रह्माकुमारीज़ में जाने के लिए दबाव डालता हूँ और मुझे वहां से हटाने की मांग करने लगे। हमारे चेयरमैन को मुझ पर अनुशासनिक कार्यवाही (disciplinary action) लेने को कहा गया। चेयरमैन तो सुनते ही मुझ पर क्रोधित हो गए और शिकायत को सच मान लिया। उन्होंने चीफ इन्जीनियर को बुलाकर मुझे सस्पेंड करने का आदेश दे दिया। हमारा चीफ इन्जीनियर बहुत समझदार था। उसने कहा, गोविंद भाई वरिष्ठ अधिकारी है, बिना पूछताछ के हम ऐसा सख्त कदम नहीं उठा सकते और कहा, मैं स्वयं पूरी पूछताछ करूँगा। अध्यक्ष ने यह प्रस्ताव मंजूर कर लिया। चीफ इंजीनियर ने मुझे फोन पर बताया कि मैं भावनगर आ रहा हूँ, मेरा रहने का इंतजाम करना। वो आए, मैंने स्वागत किया। उन्होंने थोड़ी देर बाद मुझे बुलाकर सारी बात बताई और कहा, शिकायत सच निकली तो आपका तबादला किया जाएगा। कल अधिकारीगण और कर्मचारीगण को यहाँ बुला लेना और आप यहाँ नहीं रहना।

अगले दिन सब लोग़ एकत्रित हुए। चीफ इन्जीनियर के पूछने पर सबने कहा, हाँ, हम पर वहाँ (ब्रह्माकुमारीज़) जाने के लिए दबाव डालते रहे हैं। उन्हीं में एक जे.ई (जूनियर इन्जीनियर) ने मेरे पक्ष में जवाब दिया। उसने कहा, अधीक्षक जी (गोविंद जी) ब्रह्माकुमारियों में जाते हैं तो कुछ तो अच्छा होगा, इस उत्सुकतावश हम भी गए थे। चीफ इंजीनियर खुद भी किसी आध्यात्मिक संस्था से जुड़े हुए थे, उनकी रुचि अध्यात्म में खूब थी। उन्होंने उस जे.ई. से कई प्रकार के प्रश्न जाँच के लिए पूछे पर उसने यही कहा, जीवन अच्छा बनाने के लिए यह ब्रह्माकुमारीज़ सत्संग अच्छा माध्यम है पर साहब ने वहां जाने के लिए किसी पर दबाव नहीं डाला। इसके बाद चीफ इंजीनियर ने मुझे बुला कर कहा, सब लोग झूठे हैं, सिर्फ जे.ई. ने सच बोला, इतना कहकर वे बड़ौदा चले गए। बाद में उन्होंने बताया कि मुझे सज़ा के तौर पर आपका तबादला करने के लिए संगठन अध्यक्ष का फोन आया था परंतु मैंने कहा, मुझे जो उचित लगेगा वही करूँगा, किसी के कहने पर प्रभावित न होऊँगा।

मेरा कुछ अहित न हुआ। इस प्रकार प्यारे बाबा ने सत्य को जीत दिलवाई। मुझे महसूस हुआ कि सच की नाव हिलती, डुलती अवश्य है पर डूबती नहीं है। ❖

लघु नाटिका

दृढ़ता में ही सफलता है

● ब्रह्माकुमारी गोदावरी, मुलुंड (मुम्बई)

पात्रपरिचयः-

1. **माया** (पाँच विकारों का प्रतीक)
2. **योगी** (पवित्रता के मार्ग का राही)
3. **परमात्मा**

(एक राजयोगी एकचित्त होकर, स्वयं को आत्मा समझकर निराकार परमात्मा शिव की याद में बैठा है। ईश्वर के स्वरूप, गुण और शक्तियों के अनुभवों की लहरों में लहरा रहा है। माया (पाँच विकार) बार-बार आकर इस योगी को झाँक कर देख रही है और उसकी तपस्या को खंडन करने के लिए विभिन्न प्रकार के शब्दों का प्रहार कर रही है।)

मायाः- अरे ओ राजयोगी, तपस्वी, अपनी तपस्या बंद करो। कब तक ऐसे स्थिर होकर एक ही स्थान पर बैठे रहोगे? अरे, एक नज़र मुझ पर भी तो डालो ना, मुझे देखो ना, क्या आँखें खोलकर भी आप प्रभु को याद करते हो? (माया योगी के और समीप आती है)

मायाः- हे तपस्वी, यह क्यों भूल गये हो कि मैं तो आपकी सबसे पुरानी साथी हूँ। आपकी रिश्तेदार हूँ। पता नहीं अचानक आप को यह क्या हो गया है, मेरी तरफ देखते ही नहीं हो, मुझे बहुत ही बुरा लग रहा है। क्या मैं आपको अच्छी नहीं लग रही हूँ। (माया योगी के और नजदीक आती है)

मायाः- योगी जी, बोलो ना, कुछ तो बोलो, मुझे बहुत ही गहरी चिंता हो रही है। सोच चल रहा है कि यदि आप जैसे जवान और बूढ़े भी पूरी उम्र यूं ही तन-मन से तपस्या करते रहोगे तो मेरा क्या होगा?

(योगी अंतर्मुखता की अवस्था में बैठा है। असीम खुशियों का अनुभव कर रहा है। अंतरात्मा का आनंद चेहरे की मुसकराहट से प्रकट हो रहा है)

मायाः- (सहन नहीं कर सकने के कारण चिल्लाती है) हे बिना जटा के योगीराज, अभी भी मान जाओ और मेरा हाथ और साथ पकड़ लो वर्ना मैं भी कोई कम नहीं। आपके चेहरे को मुरझाहट में बदल दूँगी।

(योगीराज अव्यक्त स्थिति द्वारा अव्यक्त वतन के भिन्न-भिन्न अनुभवों की लाइट-माइट को सूर्य की किरणों की तरह चारों तरफ फैलाता है। इन प्रकंपनों से माया घबराती है और योगी से थोड़ा दूर भाग जाती है लेकिन फिर-फिर योगी को देखती रहती है और कहती है..)

मायाः- अरे ओ योगीराज, आप भले कुछ भी मेरे ऊपर आजमा लो, मुझे मेरे भाई रावण का वरदान है, मैं अपनी आसुरी सेना को बुलाकर आपसे लड़ूँगी जरूर। ओ मेरे आसुरी सेना के कमांडर व्यर्थ संकल्प, आओ और प्रतिकूल वातावरण की ऐसी पवन चलाओ जो योगीराज हिल जाये।

(योगी स्वस्थिति के आसन पर विराजमान होकर सूक्ष्मवतन की ओर परिभ्रमण करता जा रहा है। शिवबाबा के गुप्त दिव्य अवतरण का अनुभव अव्यक्तवतन वासी ब्रह्मा के द्वारा कर रहा है। अपने मस्तक से बाबा की याद की शक्ति का प्रकाश चारों ओर फैला रहा है)

मायाः- बस कर, बस कर, हे योगीराज, बाह्यमुखता का ऐसा बम फोड़ूँगी जो आप बाबा के बदले मुझे ही याद करेंगे। और सुन लो, इतना कहने पर भी नहीं मानोगे तो मुसीबतों की मिसाइल छोड़ूँगी, समस्याओं की सुरंग लगाऊँगी। और क्या करूँगी पता है, सुन लीजिए, अपनी सेना के सेनापति कामराज को आपके मन के तट पर बिठा दूँगी। क्रोध को बुद्धि के द्वार पर, मोह को दिल में, लोभ को चित्त के चारों ओर तथा अहंकार को रग-रग में भर दूँगी, फिर क्या करोगे? बोलो योगीराज, क्या सोच रहे हो, फिर तो हार जाओगे ना।

(योगी ज्वालामुखी योग तपस्या के गहरे अनुभव में डूबकर बाबा के साथ सर्वसंबंधों का अनुभव कर रहा है। दृढ़ता के

संकल्प द्वारा, सर्वशक्तिवान शिवबाबा के साथ और हाथ द्वारा, अतीन्द्रिय सुख का अनुभव वातावरण में चारों ओर फैलाता जा रहा है। माया देख नहीं सकती है। वह जरा-जरा-सी आँखें खोलकर लास्ट दाँव लगा रही है)

माया:- अरे ओ प्रभु के बच्चे, अभी भी समय है, मान जाओ, मैंने अनेकानेक सच्चे और एकचित्त ध्यान धरने वालों को भी हिला दिया है। तू क्यों हिलता नहीं है, तू तो और भी हलचल के बदले अचल बनता जा रहा है। तू तो डरता भी नहीं, घबराता भी नहीं, अपनी आंतरिक शक्ति के शस्त्रों से मुझे ही मारने की कोशिश कर रहा है। बोल-बोल कर के अभी तो मेरा माथा भारी होता जा रहा है। चिंता के चक्कर आ रहे हैं, बैचेनी रूपी ब्लड प्रेशर बढ़ता जा रहा है। ऐसा लग रहा है जैसे कि मैं मौत के मुँह में जा रही हूँ। हे महावीर, कम से कम मुझे इस संसार में विनाश तक तो आराम से रहने दे। हे महावीर जी, आपकी श्रेष्ठ तपस्या के तीर मेरे अंग-अंग में काँटों की तरह चुभ रहे हैं। ओ मेरे रावण भैया, जल्दी आओ, मुझे बचाओ, बचाओ। मुझे कुछ हो रहा है। मैंने तो सोचा था, इस अकेले राजयोगी को कान से, नाक से, बाँहों से, टाँग से पकड़कर हिला दूँगी परंतु आज तो मैं ही हिल रही हूँ। आप जल्दी आओ, न जाने मेरा क्या होगा। (निराश होकर जाने लगती है, प्रभु की आवाज सुनाई देती है..)

(यदा-यदा हि धर्मस्य....गीत बजता है)

प्रभु:- हे मेरे मीठे वत्सो! सिकीलधे बच्चो! मैं निराकार शिव, प्रजापिता ब्रह्मा के तन में अवतरित हो चुका हूँ। मेरे प्यारे बच्चो, आप माया से घबराओ मत, डरो मत, माया तो कागज़ का शेर है। आपकी दृढ़ता में ही सफलता समाई है। आप योगी बनो, पवित्र बनो और आने वाली नई सृष्टि की स्थापना के कार्य में मन-वचन-कर्म से मददगार बनो। समय बहुत ही कम है। कलियुगी सृष्टि गई कि गई, सतयुगी सृष्टि आई कि आई। हे मेरे महावीर मायाजीत बच्चो, विजय आपका जन्मसिद्ध अधिकार है। आप सभी बच्चों के प्रति मेरा यही आदेश है कि आप ब्रह्मा बाप को फालो कर ब्रह्मा बाप समान संपूर्ण बनो और एकता के सूत्र में पिरो एक माला के दाने बन जाओ। बच्चे, दृढ़ता में ही सफलता है। ❖

आत्म-अनुशासन

ब्रह्माकुमार निर्मल पुरोहित, गुवाहाटी

पूछो खुद से,
क्या जीवित रहना ही लक्ष्य हमारा?
जैसे जी रहे हैं, क्या वही जीवन प्यारा?
हर मन को सुकून, हर दिल को आराम,
कुछ करना है तो अपना लो यह नारा।

बहुत हो चुका मानवता का पतन,
सुरक्षित नहीं माँ, बेटी और बहन,
दृष्टि पवित्र, उज्ज्वल चरित्र,
युवक बने ऐसा, करो कुछ जतन।

भले सज़ा करो तुम और कड़ी,
चप्पे-चप्पे पर हो पुलिस खड़ी,
भ्रष्ट आचरण जो मिटाना चाहो,
आत्म-अनुशासन की ज़रूरत बड़ी।

समझो मानव-मन का विज्ञान,
निज संकल्पों को बनाओ महान,
भरोगे मन में जो ओछी बातें,
कैसे बचा पाओगे अपना दामन?

मनोरंजन के बहाने हो रहा मन दूषित,
इसी कारण आज पर्यावरण प्रदूषित,
समय कम है, सुधारो अपने विचार,
वर्ना मानवता का विनाश है निश्चित।

स्वपरिवर्तन से होगा विश्व परिवर्तन सहज,
सीख लो राजयोग, सुनो ईश्वरीय ज्ञान महज,
व्यर्थ के विकल्पों से करो अपनी रक्षा,
शिव स्मृति का पहने रहो नित कवच।।

वर्तमान में जीयें

● ब्रह्माकुमार प्रेम प्रकाश, नोएडा

मनोवैज्ञानिकों ने अपने शोध कार्य में एक बहुत ही महत्वपूर्ण बात पाई है कि 24 घंटे में मनुष्य के मन में लगभग 30-35 हजार विचार चलते हैं। इनमें सकारात्मक, नकारात्मक, व्यर्थ तथा आवश्यक विचार होते हैं। लगभग 80% नकारात्मक तथा व्यर्थ चिंतन होता है, 10% सकारात्मक तथा 10% आवश्यक चिंतन होता है। नकारात्मक एवं व्यर्थ विचार हमारी मानसिक तथा आध्यात्मिक ऊर्जा को समाप्त कर देते हैं। इसका बुरा प्रभाव हमारी शारीरिक शक्ति पर पड़ता है। हम दिन की आखिरी वेला में थके-थके से महसूस करते हैं, नींद भी ठीक से नहीं आती, हम तनाव महसूस करना शुरू कर देते हैं और इसके बाद अवसाद (डिप्रेशन) घेर लेता है।

बातों की चीर-फाड़

निराकार परमात्मा शिव बाबा ने हमारे आध्यात्मिक पुरुषार्थ में तीव्रता लाने के लिए एक बात पर बार-बार जोर दिया है कि यदि हम तनावमुक्त एवं चिन्तामुक्त होना चाहते हैं तो हमें बीते हुए कल की बातों को भूलना होगा। कल जो बीत गया, उसकी बातों को बार-बार याद करके हम मन की खुशी को गायब कर देते हैं और जीवन आनन्द-शून्य हो जाता है। दुख देने वाली स्मृतियों को मन में लाकर मानो दुख खरीद लेते हैं। यह गड़े मुर्दे उखाड़ना ही हुआ। जैसे सर्जन मुर्दे की चीर्-फाड़ (पोस्टमार्टम) करता है, ऐसे ही हम भी वर्षों पुरानी बातों को याद करके उनका पोस्टमार्टम करते रहते हैं। सर्जन की तरह क्या हमें भी पोस्टमार्टम करने की ड्यूटी मिली है?

बहते पानी का लाभ एक बार, दुबारा नहीं

भगवान शिव कहते हैं कि बीती बातों को भूल जाओ। जो पल बीत गया, सो बीत गया। उसे याद करके क्या मिलेगा, और ही दुख-अशांति ही मिलेगी। बीता हुआ कल मर चुका है और आने वाला कल अभी पैदा ही नहीं हुआ। केवल वर्तमान हमारे हाथ में है, इसका जितना लाभ हम उठाना चाहें, उठा सकते हैं। वर्तमान में अर्थात् आज श्रेष्ठ कर्म करने की कलम हमारे हाथ में है। भविष्य हमारे वर्तमान के कर्मों के ऊपर निर्भर है। जो बात बीत गई, उसका चिंतन करके क्या लेना? क्या आपने बहती नदी के उसी पानी में दो बार हाथ धोये हैं? एक या दो सेकंड पहले आपने जिस पानी में हाथ धोये, वह तो बहुत आगे बढ़ चुका है। इसलिये शिवबाबा कहते हैं कि जो बात एक मिनट या एक घंटे पहले हुई थी, उसे बिना समय खोये भूल जाओ। अपना मन श्रेष्ठ एवं अच्छे विचारों में लगाओ। यह इतना आसान नहीं है फिर भी निरंतर अभ्यास व निरीक्षण से संभव हो सकता है। यह कठिन अवश्य है परंतु असंभव नहीं।

भविष्य की योजना बनाने में वर्तमान के आनन्द को ना खोयें

आज लोग अपने भविष्य की चिन्ता में या उसकी योजनायें बनाने में इतने व्यस्त हो गये हैं कि वर्तमान के सुख को भूल गये हैं और भूतकाल में जो अवसर उनके हाथ से निकल गये हैं, उनके कारण परेशान और गमगीन रहते हैं। मनोचिकित्सक मेडिकल भाषा में इसे हाइपर ओपिया (Hyperopia) कहते हैं जिसका अर्थ होता है, बहुत अधिक दूरदर्शिता (Farsightedness) । इसका उलटा शब्द है मयोपिया (Myopia) जिसका अर्थ है, बहुत दूर तक न देखने वाले (nearsightedness) । जब हम स्कूल में होते हैं तो कालेज के बारे में सोचते रहते हैं कि वहाँ हम मौज-मस्ती करेंगे। जब कॉलेज में होते हैं तो कैरियर के बारे में सोचते हैं। जब किसी धंधे में लग जाते हैं तो भविष्य को सुरक्षित करने की सोचते हैं। चाहे हमने अपना भविष्य सुरक्षित कर भी लिया हो लेकिन तब तक आनन्दहीन जीवन की शाम होने लगती है। निश्चित रूप से हमें भविष्य की आवश्यकताओं के बारे में योजना बनानी चाहिए परंतु वर्तमान का भी

पूरा आनन्द लेना चाहिए। **खुशी व आनन्द भविष्य की योजनायें बनाने में नहीं है परंतु वर्तमान में दूसरों को सहयोग देकर श्रेष्ठ कर्म बनाने में है। हम सबके भविष्य अलग-अलग हो सकते हैं लेकिन भावनात्मक तथा मधुर संबंध वर्तमान जीवन में ही बना सकते हैं।**

हम काल-चक्र में एक बहुत ही महत्वपूर्ण दौर से गुजर रहे हैं जबकि कलियुग के अंत तथा स्वर्णिम सतयुग के संधिकाल का समय चल रहा है। निराकार परमात्मा शिव के इस समय दो कर्त्तव्य चल रहे हैं – एक तो कलियुगी तमोप्रधान तथा पतित सृष्टि का महापरिवर्तन और दूसरा सतयुगी, सतोप्रधान एवं पावन सृष्टि की स्थापना। ऐसे समय पर वे समस्त सृष्टि के मानवों को ईश्वरीय ज्ञान एवं राजयोग की शिक्षा प्रजापिता ब्रह्मा के माध्यम द्वारा दे रहे हैं। सारी मानवता के लिए उनका यह संदेश है कि अब हम श्रेष्ठ कर्म करके दूसरों को सुख दें, दुआयें दें तथा लें, किसी को दुख ना दें, खुशी दें तथा लें। ये सब धारणायें हमें वर्तमान में चल रहे पुरुषोत्तम संगमयुग पर ही करनी होंगी। अभी नहीं तो कभी नहीं। खोये हुए अवसर फिर दोबारा नहीं मिलते, गया वक्त फिर हाथ नहीं आता। तो आइये, हम सब मिलकर अपने आध्यात्मिक पुरुषार्थ में इतनी तीव्रता लायें कि हम बीती हुई कड़वी और खट्टी बातों को भूल जायें और मनुष्य से देवता बनने का सुंदर भविष्य तैयार करें। ❖

अपने किये पर ग्लानि हुई

लाल साहब यादव, जिला जेल, देवरिया (यू.पी.)

मैं ने 22 वर्षों तक सेना में नौकरी की, सेना में अच्छा पहलवान भी रहा और भारत के कई राज्यों में कुश्ती कला भी दिखाई। सेवानिवृत्ति के बाद मुम्बई में एक ट्रक खरीदकर शान्तिपूर्वक व्यापार करने लगा।

पैतृक गाँव में छोटे भाई की किसी के साथ कहा-सुनी हो गई, मैं गाँव गया, वहाँ क्रोध में आने से हम दोनों से एक व्यक्ति की हत्या हो गई और दोनों को जेल हो गई। दस माह जेल काटकर घर लौटे तो एक दिन दूसरे समूह के लोगों ने नदी पर हमें घेर लिया। दोनों तरफ से गोलियाँ चली, मेरे भाई के हाथों सात लोगों को गोली लगी। हम दोनों फिर जेल में आ गये।

जेल में मन विचारों में उलझा रहने लगा। मैं परेशान रहने लगा कि अब क्या करूँ। मैंने निश्चय कर लिया कि पक्का अपराधी बनूँगा, हत्या-लूट का पेशा करूँगा, पुलिस के थाने बम से उड़ा दूँगा और दुश्मन के घर के लोगों को मौत के घाट उतार दूँगा।

एक दिन जेल में दो भाई आये माइक लिये हुए। मुझे वे जोकर जैसे लगे। उन्होंने बैरक में आत्मा, परमात्मा का परिचय दिया। मैं उन्हें जोकर समझ हँसता रहा। वे अगले दिन फिर आये। इस बार मैंने ध्यान से सुना।

उन लोगों के जाने के बाद मैं अपने बारे में विचार करने लगा तो मेरा मन घबरा गया कि मैंने तो बहुत बड़ी गलती की है और आगे भी गलती करने की सोच रहा हूँ।

मुझे अपने किये पर ग्लानि होने लगी। मैंने बाबा से कसम खाई कि कोई मुझ पर गोली भी चलायेगा तो मैं सहन करूँगा, गोली नहीं चलाऊँगा। मैं पिछले दस मास से रोज मुरली सुनता हूँ। अब मेरी घबराहट खत्म हो गई है। मैं जान चुका हूँ कि मुझे परमधाम जाना है बाबा के पास। मैं शिवबाबा की संतान हूँ। मैं सुबह ढाई बजे उठकर बाबा को याद करता हूँ और रात सोने से पहले भी बाबा को नमस्ते बोलकर बाबा की गोदी में सिर रखकर सोता हूँ। मैं निमित्त बनने वाले भाइयों का बहुत शुक्रगुजार हँ, उन्होंने सच्ची राह दिखाई। ❖

शक्ति निकेतन : एक सुखद आश्चर्य

● डॉ.अयाज एहमद कुरैशी

बहुभाषी, कथाकार, कवि, आलोचक, शिक्षाविद्, समाजसेवी डॉ. कुरैशी वर्तमान में शासकीय कस्तूरबा कन्या उच्चतर माध्यमिक विद्यालय इन्दौर के प्राचार्य हैं। विभिन्न विषयों पर लेखक की पाँच किताबें प्रकाशित हो चुकी हैं तथा अनेक राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय पुरस्कारों से सम्मानित हैं। इनकी ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय एवं शक्ति निकेतन छात्रावास से सक्रिय सम्बद्धता है।

किसी ने ठीक ही कहा है, मानव आवास बदलता है, वस्त्र बदलता है, मित्र बदलता है, फिर भी दु:खी रहता है क्योंकि वह स्वभाव नहीं बदलता। वास्तव में स्वभाव बदलना सरल नहीं है। यहाँ तामसिक स्वभाव के परिवर्तन की बात की जा रही है। ऐसा विकारग्रस्त स्वभाव, निर्मल बुद्धि और शांतचित्त का परम शत्रु है।

यह दुर्भाग्यपूर्ण सत्य है कि हमारी युवा पीढ़ी ने विकारों के प्रभाव में जिस विस्फोटक स्वभाव को विकसित किया है वह सत्संग और उपदेश से ऐसे बिदकता है जैसे लाल रंग से सांड।

किन्तु, कस्तूरबा कन्या उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, इन्दौर के प्राचार्य के रूप में जब मेरा साक्षात्कार मेरी शाला की उन छात्राओं से हुआ जो शक्ति निकेतन छात्रावास में रहती हैं, तो मुझे उनके मृदुल अनुशासित शांत आचरण को देखकर अचरज हुआ। प्रात:काल अपने मृदुल कंठ से प्रतिदिन शाला की प्रार्थना सभा में संगीतमय प्रस्तुति देती, कक्षाओं में नियमित, साहित्यिक-सांस्कृतिक प्रतियोगिताएं हों या परीक्षायें सबमें श्रेष्ठता का परचम फहराती ये बालिकायें अपनी ओर बरबस ध्यान आकर्षित करने का हुनर रखती हैं।

जैसे-जैसे शक्ति निकेतन की इन छात्राओं से मेरा परिचय प्रगाढ़ होता गया, मेरी उनके प्रशिक्षण केन्द्र को जानने, समझने की जिज्ञासा प्रबल होती गई और जब एक ब्रह्माकुमारी बहन न्यू पलासिया स्थित दिव्य जीवन कन्या छात्रावास, ओम शांति भवन सेवा केन्द्र पर रविवारीय ध्यान-योग आध्यात्मिक सत्संग का निमन्त्रण लेकर उपस्थित हुई तो मैंने सहर्ष स्वीकार कर लिया।

रविवार की वह सुबह मुझे आज भी याद है, जब लगभग एक एकड़ में फैले, इस पाँच मंज़िला हॉस्टल कॉम्प्लेक्स को मैं बाहर से चकित भाव से देख ही रहा था कि श्वेत परिधानों में लिपटी ब्रह्माकुमारियाँ स्वागत हेतु सामने उपस्थित हो गईं। मैं स्व-स्फूर्त गति से उनके पीछे-पीछे मेडिटेशन हॉल में जाकर बैठ गया जहाँ पहली बार मेरा परिचय ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय की उन शिक्षाओं से हुआ, जो धर्म, पंथ, जाति, सम्प्रदाय से ऊपर उठकर एक ईश्वर, एक विश्व परिवार का संदेश देते हुये अध्यात्म के अलौकिक संसार की यात्रा करा रही थीं।

कार्यक्रम समाप्त होने पर ब्रह्माकुमारी बहन ने मुझे छात्रावास का अवलोकन कराया। हर कदम पर एक नये और चौंका देने वाले सत्य से रूबरू होते हुये मैंने जाना कि सन् 1983 में स्थापित इस छात्रावास के 33 कमरों, 4 हॉल, ध्यान कक्षों, डायनिंग, किचन, मशीन रूम, ग्रेनरी वॉश एरिया, पोर्च, पार्किंग आदि की सफाई के लिए नौकर नहीं हैं, न ही खाना बनाने के लिए बावर्ची, न कपड़े धोने के लिए धोबी। और तो और पूरे हॉस्टल की साज-सज्जा का काम भी छात्रावास की कन्याओं द्वारा किया जाता है। इस छात्रावास में छठी कक्षा से स्नातक तक हिन्दी व अंग्रेज़ी माध्यम की छात्राओं के रहने-पढ़ने का प्रबंध है। हर मंज़िल पर छात्राओं

के पढ़ने के लिए बड़ा हॉल है, जहाँ सीनियर छात्राएँ, जूनियर छात्राओं को उनके होमवर्क में मदद करती और पढ़ाती हैं लेकिन किस छात्रा को कौन और कितनी देर पढ़ायेगा, यह छात्रावास प्रबंधन तय करता है, विशेष परिस्थितियों में छात्रावास द्वारा छात्राओं को ट्यूटर भी उपलब्ध कराया जाता है।

इस छात्रावास में मध्यप्रदेश और छत्तीसगढ़ के अलावा राजस्थान, महाराष्ट्र, गुजरात, उत्तरप्रदेश, बिहार, उड़ीसा, हरियाणा, पंजाब, दिल्ली, हिमाचल प्रदेश, आसाम, कर्नाटक, तमिलनाडु, मणिपुर सहित देश के 25 प्रांतों तथा नेपाल और दुबई देशों की कुल 150 छात्राओं की दिनचर्या प्रात: 3:30 बजे से आरंभ होती है। नित्यकर्म, स्नान, आध्यात्मिक कक्षा और जलपान से निवृत्त होकर ये छात्रायें 6:30 से 8:30 के मध्य अपने-अपने स्कूल कॉलेज जाने के लिए तैयार हो जाती हैं। दोपहर का भोजन 10:30 से 4:00 बजे के मध्य और रात्रि भोज 7:30 से 9:00 बजे के मध्य दिया जाता है। ये बालिकायें अन्न शुद्धि का व्रत धारण किये होने के कारण आश्रम के बाहर का अन्न-जल भी ग्रहण नहीं करतीं। इन्हें मोबाइल रखने की अनुमति नहीं है। शक्ति निकेतन का प्रबंधन छोटे-बड़े 43 विभागों में विभक्त है जिनमें सभी बालिकाओं की बारी-बारी से ड्यूटी लगती है। सबसे महत्वपूर्ण है पर्सनल चार्ट जिसमें प्रत्येक छात्रा से शाम 7:30 से 8:00 बजे के मध्य दिनभर का विवरण लिया जाता है और सही अथवा गलत की समझाइश दी जाती है।

यहाँ पढ़ाई-लिखाई, अध्यात्म और अनुशासन के साथ-साथ छात्राओं को कम्प्यूटर, पाककला, साज-सज्जा, चित्रकला, गायन, वादन, नृत्य, लेखन जैसे लोकोपयोगी विषय भी सिखाये जाते हैं। चारित्रिक उत्थान पर विशेष बल दिया जाता है। छात्राओं के स्वभावगत विकारों को दूर कर उन्हें मृदुल एवं सहयोगी बनने की प्रेरणा देकर उनके नैतिक विकास और आध्यात्मिक उत्थान पर बल दिया जाता है। देश के विभिन्न प्रांतों से आयी छात्राओं को एक-दूसरे की भाषा, संस्कृति, व्यंजन सीखने पर विशेष ध्यान दिया जाता है जिससे राष्ट्रीय एकता को बल मिलता है।

मैंने कुछ छात्राओं से उनके अनुभव जानने चाहे तो उन्होंने बताया कि उन्हें यहाँ इतना प्यार और अपनापन मिलता है कि इतने कड़े अनुशासन के बाद भी उन्हें घर की याद नहीं आती। यही नहीं, शक्तिनिकेतन में आकर वे व्यवहार कुशल, स्वावलंबी, कर्त्तव्यनिष्ठ बनने के साथ-साथ संतुलित जीवन जीना सीख गई हैं। एक कन्याशाला के प्राचार्य होने के नाते मेरे लिए यह आश्चर्च का विषय नहीं है कि इतने कठोर नियंत्रण में सभी बालिकायें प्रसन्न और स्व-अनुशासित हैं।

अपने इस अनुभव से प्रेरित होकर मैंने माउंट आबू में आयोजित ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय के प्लेटिनम जुबली ग्रांड फिनाले में भाग लेकर यह जाना कि यह विश्व में महिलाओं द्वारा संचालित सबसे बड़ा संस्थान हैं जिसमें लगभग बीस हजार ब्रह्माकुमारियां भारत सहित विश्व के 139 देशों में इस ईश्वरीय विश्व विद्यालय का संचालन कर रही हैं। देश में ही ब्रह्माकुमारीज़ के 8500 सेवाकेन्द्र हैं। निश्चित ही ब्रह्माकुमारीज़ शक्ति निकेतन एक सुखद आश्चर्य है।

छात्रावास में नई कन्याओं के प्रवेश हेतु जनवरी से अप्रैल माह तक संपर्क कर सकते हैं। प्रवेश प्रक्रिया जनवरी माह में प्रारंभ हो जाती है। अधिक जानकारी हेतु इस पते पर संपर्क कर सकते हैं:-

बी.के. करूणा, 'शक्ति निकेतन'
ओमशांति भवन, ज्ञान शिखर,
गेट नं.-2, 33/4, न्यू पलासिया,
इन्दौर (म.प्र.) 452001
फोन नं. :- 0731-2531631
मो.:- 94253-16843,
फैक्स:- 0731-2430444
ईमेल: shaktiniketan@gmail.com

श्रेष्ठ संकल्पों की कमाल

● ब्रह्माकुमार सूर्य, आबू पर्वत

भगवानुवाच..... मुझे कैसे बच्चे चाहिएँ?

ऐसे बच्चे जो सेकेण्ड में मन के संकल्पों को फुलस्टॉप लगा सकें।

भगवानुवाच..... व्यर्थ संकल्पों को समाप्त करो और श्रेष्ठ संकल्पों की कमाल देखो। जो आत्माएँ स्वयं को व्यर्थ से मुक्त करेंगी, उनमें ही श्रेष्ठ संकल्पों का बल होगा और उनके श्रेष्ठ संकल्प ही कमाल करेंगे। सर्वश्रेष्ठ संकल्प हैं स्वमान के संकल्प। हम संकल्प शक्ति से ही अपना कारोबार चला सकते हैं, दूसरों के संकल्पों को भी बदल सकते हैं, किसी का भी आह्वान कर सकते हैं तथा समस्याओं को भी समाप्त कर सकते हैं। प्रस्तुत है श्रेष्ठ संकल्पों के कुछ चमत्कारी फायदों की चर्चा –

स्वयं को व्यर्थ से मुक्त करें

हम दृढ़ संकल्प कर लें कि हमें व्यर्थ संकल्पों में नहीं रहना है। यह बाबा की मनाही है। परंतु इसके लिए आवश्यक है कि हम मनुष्यों को न देखें तथा उनके व्यवहार, उनके संस्कार, उनके स्वार्थ व उनके शब्दों को न देखें। देखें तो केवल स्वयं को और अपने महान लक्ष्य को। दूसरों को तो सदा ही देखते आये, अब स्वयं को देखने व सम्पन्न बनने का समय है। याद रहे, जो मनुष्य सच्चे दिल से स्वयं को मुक्त करना चाहेंगे वे इस महान स्थिति को अवश्य ही प्राप्त कर सकेंगे।

मन की कंट्रोलिंग पावर हमारे ही पास है

भगवानुवाच... मन की कंट्रोलिंग पावर व रुलिंग पावर आपके पास है, उसे काम में लगाओ। हम इस सत्य को स्वीकार कर लें कि मन हमारा है, हम मन के मालिक हैं। हमने हज़ारों वर्षों से मन को खाली छोड़ दिया था इसलिए वह इधर-उधर भटक गया। जहाँ उसे क्षणिक सुख मिला, वह वहीं भाग गया। वह इतना भटक गया है कि अब नियंत्रित ही नहीं होता।

साधना करें, मैं आत्मा स्वराज्य अधिकारी हूँ, मन की मालिक हूँ, इस मन को मेरे कंट्रोल में ही चलना है। मैं मन को कंट्रोल कर सकती हूँ, मैं मास्टर सर्व शक्तिवान हूँ। अपने मन से बातें करें, हे मेरे मन, अब तू भटक मत, तूने हज़ारों वर्षों से भटक कर देख लिया, तुझे क्या मिला? अब शान्त हो जा। मन को साधने की लम्बे समय तक निरन्तर साधना करें। हम मन को कंट्रोल कर सकते हैं, बस हमें यह दृढ़ इच्छा हो।

मन को शान्त करने के लिये

कई आत्माओं का मन तो जैसे कि व्यर्थ का भण्डार ही बन गया है, वे व्यर्थ ही सुनते हैं, व्यर्थ ही बोलते हैं व व्यर्थ में रहने को अपनी बुद्धिमता समझते हैं। ऐसी आत्माओं का जीवन व्यर्थ ही चला जाता है, उन्हें ईश्वरीय अनुभूतियों का तो पता ही नहीं होता। वे खाली-खाली रहकर भी स्वयं को भरपूर होने का दिखावा करते हैं। उनके भाग्य पर तो उन्हें ही अश्रुधार बहानी पड़ेगी।

महसूस करें अपने व्यर्थ को। यदि आप परेशान हैं तो अपने व्यर्थ को चेक करें, यदि आप समस्याओं से घिरे हैं तो व्यर्थ से मुक्त हो जाइये और श्रेष्ठ संकल्पों से स्वयं को भरें। हमारे पास श्रेष्ठ संकल्पों का भंडार है- डायरेक्ट भगवान के महावाक्य, उनका अध्ययन करें। श्रेष्ठ संकल्पों का आनंद आपको तृप्त करेगा। दूसरों को दोष न दें, दोषी वही है जो दु:खी है।

मन को शांत करने के लिये अशरीरी, स्वमान, आत्मिक दृष्टि, साक्षीभाव व शुभ भावनाओं को बढ़ाएँ। इन पाँच धारणाओं से मन की गति धीमी होने लगती है। याद रहे, खाली मन में ही व्यर्थ का अंबार लगता है। अमृतवेले यदि हम स्वयं को ज्ञान-अमृत से भर दें, चाहे पाँच स्वरूपों के अभ्यास से, चाहे मुरली से तो मन काफी सुखद अनुभूति में रहेगा।

ज्ञान के बल का प्रयोग करें

अज्ञान ने मन को भटकाया है, ज्ञान उसे स्थिर करेगा। अज्ञानवश

आत्मा अन्धकार में पहुंच गई, अन्धकार में मन भटक गया। ज्ञान उसे रोशनी में ले जाता है और मंज़िल स्पष्ट दिखने लगती है। यूँ तो व्यर्थ अनेक कारणों से चलता है परन्तु आज हम केवल 5 बातें ही लेंगे –

(1) कामवासना व देह के आकर्षण वश उठने वाले व्यर्थ संकल्प, (2) समस्याओं के कारण उठने वाले संकल्प, (3) बच्चों की चिन्ता या अपने भविष्य की चिन्ता के कारण उठने वाला व्यर्थ, (4) भय के कारण उठने वाले व्यर्थ संकल्प, (5) दूसरों के कटुवचन, व्यवहार व टकराव के कारण उठने वाले व्यर्थ संकल्प।

कामवासना व अपवित्रता के कारण उठने वाले व्यर्थ को इस तरह शान्त करें... मैं सम्पूर्ण देवता था, अपने दैव स्वरूप को दिन में 5 बार अवश्य याद करें। मैं आत्मा मूल रूप से पवित्र हूँ... यह याद करें।

इस तरह चिन्तन करें कि भगवान पवित्र आत्माओं को ही ज्यादा प्यार करता है, मुझे अब इस ईश्वरीय आज्ञा को पूर्ण करना है। यदि मैं अपवित्र संकल्प करता हूँ तो मैं बाबा के कार्य में विघ्न डालता हूँ, मुझे तो ईश्वरीय कार्य में पवित्रता का योगदान करना है, मुझे तो पवित्र वायब्रेशन्स फैलाकर प्रकृति को पावन करने में मदद करनी है... जन्म-जन्म तो मैंने विकारों में बिताया, अब मुझे भगवान की श्रीमत पर चलकर पवित्रता का सुख लेना है। मुझे पवित्र बनकर बाबा की महान सेवा करनी है... मैं तो पवित्रता का अवतार हूँ।

जीवन में जब समस्यायें आती है तो मनुष्य के मन में अनेक संकल्प उठते हैं। कभी-कभी समस्यायें लम्बा समय चलती हैं, कभी-कभी समस्यायें अति घातक होती हैं। ऐसे में मनुष्य को अति धैर्य व आत्म-विश्वास से काम लेना है। कभी-कभी अनचाही समस्याएँ भी आ जाती हैं... तो इस तरह चिन्तन करें...

समस्या आई है तो जायेगी अवश्य...यह मेरा पेपर है, इससे मुझे अधिकतम नम्बर लेने हैं...मेरे साथ बाबा है, मैं उनका साथ लेकर व उनकी मदद से सहज ही पार हो जाऊँगा।

समस्या है तो उसका समाधान भी मेरे पास ही है...यदि मुझे कुछ सहन करना पड़े तो मैं करूंगा परन्तु विचलित नहीं हूंगा। बाबा ने मुझे शक्तियाँ दी हैं... उसने कहा है कि मास्टर सर्वशक्तिवान के नशे में रहने से हाथी जैसी समस्या भी चींटी जैसी बन जायेगी। स्वयं भगवान ने कहा है कि तुम परिस्थितियों से अधिक शक्तिशाली हो।

समस्यायें आ जाएँ तो अपनी साधना को और बढ़ा दें। अमृतवेले व मुरली से समाधान मिलेगा, इन्हें ढीला न करें। बस नशे में रहें कि मैं मास्टर सर्वशक्तिवान हूँ और सर्वशक्तिवान की छत्रछाया मेरे सिर पर है। इससे व्यर्थ संकल्प समाप्त हो जायेंगे। अलग-अलग तरह की समस्या के व्यर्थ संकल्प भी अलग-अलग तरह के होते हैं। ज्ञान का बल बढ़ाते चलें व नेगेटिव संकल्पों को पॉजीटीव में बदलते चलें।

बच्चों की भिन्न-भिन्न समस्यायें मात-पिता का अलौकिक शृंगार ही बिगाड़ देती हैं। अनेक माताएँ तो बिगड़े बच्चों को देखकर खुद ही बीमार हो जाती हैं और भाइयों को क्रोध आता है। यह कलियुग का अन्त है, चारों ओर तमोप्रधानता है, युवकों को संगदोष में आने के भरपूर अवसर हैं। जिन युवकों को अपना लक्ष्य स्पष्ट नहीं होता वे जल्दी ही माया के चक्रव्यूह में भटक जाते हैं।

ऐसे में माँ-बाप का चिंतित होना स्वाभाविक है परन्तु चिन्ता नहीं, श्रेष्ठ चिन्तन व स्वमान से परिस्थिति को बदलें। पहले यह सोचें कि ये देवकुल की महान आत्माएँ हैं। रोब से नहीं बल्कि स्वमान व प्यार से उन्हें समझायें, अच्छी भाषा का प्रयोग करें। उन्हें अच्छे वायब्रेशन्स दें। संकल्प यही रखें कि ये ठीक हो जायेंगे। याद रखें, जैसा आप बार-बार सोचेंगे, वैसा ही पायेंगे। विचार करें...मेरी शुभभावनाओं में इन्हें बदलने की शक्ति है...ये अवश्य बदलेंगे... समस्या बाबा को अर्पण कर दें व विश्वास रखें कि सब कुछ ठीक हो

जायेगा। साक्षी भी रहें और उन्हें समझायें भी।

मनुष्य को डर के कारण अनेक व्यर्थ संकल्प चलते हैं। मनोविकारों और पापकर्मों ने मनुष्य के अन्दर भय उत्पन्न कर दिया है। कभी यह भय कि भविष्य में असफलता न हो जाए, कभी फेल होने का भय सताता है, कभी माया से हार न हो जाए यह भय व्यर्थ को जन्म दे देता है। कभी अन्धेरे का भय तो कभी जादू-टोने का भय, कहीं भटकती आत्माओं का भय, तो कहीं मृत्यु या व्याधियों का भय। अपमान या समाज में निन्दा होने का भय अलग। किसी को पानी से भय, तो किसी को कुत्ते से, तो किसी को सांप से।

मैं आत्मा अजर-अमर अविनाशी हूँ, मास्टर सर्व शक्तिवान हूँ तथा सर्व शक्तिवान मेरे साथ हैं, मैं महावीर हूँ, विजयी हूँ, इन स्मृतियों को रखने से धीरे-धीरे भय समाप्त होता जाता है।

अपने मन को शक्तिशाली संकल्पों से भरें कि सत्य के सूर्य को असत्य के काले बादल ढक नहीं सकते, सत्य को सिद्धि प्राप्त है स्वत: ही सिध्द होने की... मेरे साथ कुछ भी बुरा होगा ही नहीं... मेरा ज़िम्मेवार स्वयं भगवान है। मैं सत्य हूँ तो मेरी हार हो ही नहीं सकती। मेरे लिए ड्रामा पूर्ण कल्याणकारी है... जिन्हें भगवान साथ दे रहा हो उन्हें डर कैसा? मुझे तो निर्भय होकर महापरिवर्तन देखना है। मेरी विजय तो निश्चित है... इस तरह के विचारों से निर्भय बनें। कुछ भी समझ में न आये तो सोचो, डर क्यों... जो कुछ होगा, उसका सामना करेंगे।

दूसरों के कटुवचन सुनकर अच्छों-अच्छों के मन विचलित हो जाते हैं और उसमें भी यदि कटुवचन वे बोलें जो हमारे अपने हैं अथवा जिन्हें हमने बहुत प्यार व दुलार दिया है तो मनुष्य का दिल भी टूट जाता है। कटुवचन, अपमान वा टकराव योगियों के मन को अस्थिर कर देता है। स्वयं को झुकाकर टकराव से बचें। बुद्धिमान व ज्ञानवान वही है जो टकराव में नहीं आता। टकराव तो जीवन में बिखराव लाता है। नम्रता का कवच पहन लें तो कटुवचन रूपी बाण आपको लगेंगे नहीं... कटुवचनों को स्वीकार ही न करें, मुसकराकर आगे बढ जाएँ। स्वमान में रहें तो आपका सम्मान बढ़ेगा। विचार करें... यदि दूसरा मनुष्य कटु वचन बोलना नहीं छोड़ता तो मैं अपनी श्रेष्ठ स्थिति क्यों छोडूं? इनके कारण मैं अपनी अवस्था नहीं बिगाडूंगा... मेरी स्थिति अनमोल है और इनके कटुवचन मूल्यहीन हैं... कटुवचन कमज़ोर होते हैं जबकि मैं शक्तिशाली हूँ... मुझे इनके मूल्यहीन वचन याद नहीं रखने हैं... बल्कि मुझे तो बाबा के अमृततुल्य बोल याद रखने हैं... यही तो समय है जबकि मुझे मान-अपमान, निन्दा-स्तुति में समान रहना है। इस तरह के चिन्तन से व्यर्थ को समाप्त करें।

व्यर्थ संकल्प जितने-जितने समाप्त होते जायेंगे, आत्मा में शक्तिशाली संकल्पों का बल बढ़ता जायेगा तथा संकल्पों से सिद्धि मिलती जायेगी। कुछ लोगों के सुन्दर अनुभव पाठकों के लाभार्थ प्रस्तुत हैं।

पूना से एक माता का बच्चा कई वर्ष से गुम हो गया था। माताजी बहुत दु:खी थी। उसने उपाय पूछा। हमने उसे राय दी कि मैं मास्टर सर्वशक्तिवान हूँ, यह स्वमान लेकर 21 दिन तक प्रतिदिन एक घण्टा शक्तिशाली योग करो व अन्त में उस बच्चे का आहवान करो। चमत्कार था कि 22 वें दिन ही उस लड़के का फोन आ गया कि मम्मी मैं ठीक हूँ और आपसे मिलने आ रहा हूँ।

राउरकेला (उड़ीसा) के एक व्यापारी के 5 करोड़ रुपये उधारी में फँस गये थे, उसे क्षमा दान करना सिखाया व बताया कि प्रतिदिन उन्हें दुआएँ दो व मास्टर सर्व शक्तिवान का अभ्यास करो। केवल 12 ही दिन में सारा पैसा मिल गया।

एक एम.बी.ए. किया कुमार एक अधिकारी की नौकरी के लिए इन्टरव्यू देने जा रहा था। उसने पूछा कि क्या करूं? हमने उसे राय दी कि बड़ा-सा बैज लगाकर जाना व संकल्प

(शेष..पृष्ठ 21 पर)

ब्र.कु. आत्मप्रकाश, सम्पादक, ज्ञानामृत भवन, शान्तिवन, आबू रोड द्वारा सम्पादन तथा ओमशान्ति प्रिन्टिंग प्रेस, शान्तिवन -307510, आबू रोड में प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय के लिए छपवाया। संयुक्त सम्पादिका - ब्र.कु. उर्मिला, शान्तिवन
E-mail : omshantipress@bkivv.org Ph. No. : (02974) - 228125 gyanamritpatrika@bkivv.org

1.शान्तिवन- ज्ञान-चर्चा के बाद राजस्थान राजस्व मंडल के सदस्य भ्राता बी.एल.गुप्ता सपरिवार दादी रतनमोहिनी जी के साथ समूह चित्र में। **2.भीनमाल-** विश्व शांति मेले का उद्घाटन करते हुए श्रीश्री 1008 महंतश्री बाबुगिरी जी महाराज, श्रीश्री 1008 महंतश्री प्रेमभारती जी महाराज, श्रीश्री महंतश्री लहर भारती जी महाराज, ब्र.कु. भूपाल भाई, ब्र.कु. जागृति बहन तथा ब्र.कु. गीता बहन। **3.अयोध्या-** रामजन्मभूमि मंदिर के प्रधान पुजारी महाराज जन्मेजयशरण जी एवं महाराज मंजुलदास जी को ईश्वरीय सौगात देते हुए ब्र.कु. सुधा बहन। **4.दीव-** ज्ञान-चर्चा के बाद सुप्रसिद्ध कथाकार भ्राता रमेश ओझा के साथ ब्र.कु. गीता बहन, नगरपालिका अध्यक्ष हितेश भाई एवं अन्य। **5.सफाला-** परमात्म अवतरण आध्यात्मिक मेले के उद्घाटन अवसर पर बोलते हुए महाराष्ट्र के आदिवासी विकास राज्यमंत्री भ्राता राजेन्द्र गावित। मंचासीन हैं ब्र.कु. दिव्यप्रभा बहन। **6.पिपिलि-** उड़ीसा के मुख्यमंत्री भ्राता नवीन पटनायक को ईश्वरीय सौगात देते हुए ब्र.कु. शशि रेखा बहन। **7.पणजी-** स्नेहमिलन कार्यक्रम में संबोधित करते हुए गोवा के खेल एवं युवा मामलों के मंत्री भ्राता रमेश तवडकर। मंचासीन हैं ब्र.कु. शोभा बहन तथा अन्य। **8.दिल्ली-** 'एवेकनिंग स्प्रिच्युलिटी' पुस्तक के लिए 'आउटस्टेन्डिंग अचीवमेंट अवार्ड', डॉ.भीष्म नारायण सिंह, पूर्व राज्यपाल, आसाम से प्राप्त करते हुए ब्र.कु.डॉ.बिन्नी बहन।

Regd. No. RAJHIN10563/65, Postal Regd. No. RJ/SRO/9559/2012-2014
Posted at Shantivan-307510 (Abu Road) on 1-6 of the month.

अजमेर- राजस्थान के मुख्यमंत्री भ्राता अशोक गहलोत को ईश्वरीय सौगात देते हुए ब्र.कु. रूपा बहन। साथ में ब्र.कु. अंकिता बहन।

शान्तिवन- आध्यात्मिक कार्यक्रम में संबोधित करते हुए म.प्र. के मुख्यमंत्री भ्राता शिवराज सिंह चौहान। मंचासीन हैं दादी रतमोहिनी, ब्र.कु. निर्वैर भाई, ब्र.कु. ओमप्रकाश भाई, ब्र.कु. अवधेश बहन तथा अन्य।

ओ.आर.सी. (दिल्ली)- वार्षिकोत्सव का उद्घाटन करते हुए आदिवासी मामलों की राज्यमंत्री बहन रानी नारा, दादी कमलमणि, ब्र.कु. बृजमोहन भाई, ब्र.कु. आशा बहन तथा अन्य।